TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शनिवार 14 | अक्टूबर 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :2 | अंक :32 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

आने वाला दशक उत्तराखण्ड का होगा: पीएम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जागेश्वर धाम में की पूजा अर्चना

नई दिल्ली एजेंसी। उत्तराखंड दौरे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, मेरा विश्वास है कि ये दशक उत्तराखंड का होने वाला है। उत्तराखंड विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचे और आप लोगों का जीवन आसान हो इसके लिए हमारी सरकार पूरी ईमानदारी से काम कर रही है।

अल्मोड़ा के जागेश्वर धाम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विधिवत तरीके से पूजा अर्चना की। इस दौरान मंदिर के पुजारी ने पूरे विधि-विधान और मंत्रों के बीच प्रधानमंत्री को पूजा कराई। पीएम मोदी ने भगवान शिव की आरती उतारी और आशीर्वाद लिया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुंजी गांव में स्थानीय लोगों से बातचीत भी की और उन्होंने पिथौरागढ़ के पवित्र पार्वती कुंड में दर्शन और पूजन किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उत्तराखंड में पिथौरागढ़ के पवित्र पार्वती कुंड में दर्शन और पूजन से अभिभूत हूं। यहां से आदि कैलाश के दर्शन से भी मन आह्लादित है। प्रकृति की

गोद में बसी अध्यात्म और संस्कृति की इस स्थली से अपने परिवारजनों के सुखमय जीवन की कामना की। कुंजी गांव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेना और आईटीबीपी के जवानों से मिले।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तराखंड के एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे। प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी।

नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को समर्पित है प्रदेश सरकार: योगी

मुख्यमंत्री ने मिशन शक्ति के चौथे चरण का किया शुभारंभ

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास से नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को समर्पित मिशन शक्ति के चौथे चरण का आगाज महिला सशक्तिकरण रैली को रवाना कर किया, जो राजधानी के विभिन्न पड़ाव से होते हुए 1090 चौराहे पर समाप्त हुई। रैली के जरिये केंद्र और राज्य सरकार की ओर से महिलाओं-बेटियों के कल्याण के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी दी गई।

इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा

कि प्रदेश में वर्ष 2020 में महिला संबंधी अपराधों को नियंत्रित करने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसकी थीम थी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन। तीन मुद्दों को लेकर शुरू हुआ कार्यक्रम आज मिशन शक्ति के नाम से जाना जाता है। इस कार्यक्रम ने प्रदेश में लोकप्रियता हासिल करने के साथ पूरे देश में महिला संबंधी अपराध को नियंत्रित करने और अपराधियों को सजा दिलाने वाले राज्यों में अग्रणी राज्य बन गया। मिशन शक्ति के इस चौथे चरण का भी यह उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी 75 जिलों के लिए जागरुकता रैली का शुभारंभ किया गया है। इसके बाद प्रदेश के हर जनपद के स्कूल, कॉलेज में प्रभात रैलियां निकाली जाएंगी। इसके अलावा उन जनपदों में महिला सुरक्षा, सम्मान, स्वावलंबन को लेकर अच्छा काम करने वालों को सम्मानित किया जाएगा। वहीं 15 अक्टूबर से हर शहर, गांव और नगर निकायों के वार्ड में केंद्र और राज्य सरकार की महिला संबंधी योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 15 अक्टूबर से पूरे प्रदेश में महिलाओं को जागरूक करने के साथ उनकी समस्याओं के समाधान के विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएंगे। इसके साथ ही महिला और बेटी की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने वाले से सख्ती से निपटा जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र, प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद, डीजीपी विजय कुमार, विशेष पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार, अपर पुलिस महानिदेशक प्रशासन नीरा रावत, अपर पुलिस महानिदेशक महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन पद्मजा चौहान आदि उपस्थित थे।

ब्यूरोक्रेसी पर सीएम योगी सख्त, यूपी में नहीं चलेगा 'क्लब कल्चर'

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेष के अधिकारियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि अब यहां अधिकारियों का 'क्लब कल्चर' नहीं चलेगा उन्हें जनता की समस्याओं के समाधान के लिए फील्ड पर दिखना होगा। यदि वे ऐसा नहीं कर पा रहे हैं तो फील्ड की तैनाती को छोड़ दें। मुख्यमंत्री ने लापरवाह अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यशैली को लेकर बेहद कड़ा रुख अपनाया है। मुख्यमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से डीएम और एसएसपी-एसपी से कहा कि फील्ड में तैनाती जनसेवा का सबसे अच्छा

अवसर होता है। इसके साथ ही राजस्व वादों के निपटारे में देरी पर उन्होंने मंडलायुक्त और डीएम की जवाबदेही तय की है। मुख्यमंत्री ने आईजीआरएस की दो माह की रिपोर्ट की तुलना करते हुए कहा कि अधिकारी जनता के लिए तैनात हैं, जनता से मिलना और उनकी समस्याओं का निस्तारण शीर्ष प्राथमिकता पर होना चाहिए। फील्ड में तैनात जो अधिकारी-कर्मचारी क्लब कल्चर के चलते ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, वे तत्काल फील्ड की तैनाती छोड़ दें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि फील्ड में हर तैनाती मेरिट के आधार पर ही होनी चाहिए। यदि कहीं किसी अधिकारी ने सिफारिश अथवा किसी दबाव में फील्ड में अधीनस्थ अधिकारी की तैनाती की गई है तो ऐसा करना संबंधित अधिकारी के लिए अपने भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

योगी आदित्यनाथ ने शारदीय नवरात्र, दुर्गा पूजा, विजयादशमी, दशहरा, दीपावली व छठ पूजा के मौके पर सुरक्षा प्रबंधों को लेकर कड़े निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक मुक्त पंडालों आदि के साथ त्योहारों को हर्ष, उल्लास और सौहार्द के साथ मनाए जाने के लिए सभी पुख्ता प्रबंध किए जाएं। धर्मस्थलों व शोभा यात्राओं में कहीं अश्लील गीत व कानफोडू डीजे नहीं बजना चाहिए। ऐसा हुआ तो एसएसपी व एसपी की जवाबदेही होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार की प्राथमिकताओं में महिलाओं की सुरक्षा है। इसमें भी बालिकाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के कड़े प्रबंध किए जाएं।

दरगाहों पर भाजपा नेता सुनेंगे कव्वाली, सूफी नाइट में होंगे शामिल

लोकसभा चुनाव में मुस्लिमों को रिझाने में जुटी भाजपा

लोक पहल

लखनऊ। अभी तक मुस्लिम मतदाताओं से दूरी बनाकर चलने वाली भाजपा ने अब मुस्लिम मतदाताओं को साधने की मुहिम शुरू कर दी है। फिलहाल भाजपा का फोकस सूफी मुसलमानों पर है। आरएसएस की ओर से गैर हिंदुओं को जोड़ने की पहल का सुझाव देने के बाद भाजपा ने अल्पसंख्यकों को जोड़ने की तैयारी शुरू कर दी है। 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा का फोकस सूफी मुसलमानों पर है। भाजपा के अल्पसंख्यक मोर्चा को इस मुहिम की जिम्मेदारी दी गई है। भाजपा ने इस अभियान से 150 सूफियों को जोड़ा है। ये लोग हर जिले में भाजपा नेताओं के साथ जाकर संवाद करेंगे। इस अभियान को चलाने से पहले इन सूफी और अल्पसंख्यक मोर्चे के प्रदेश पदाधिकारियों को भाजपा प्रदेश मुख्यालय में ट्रेनिंग भी दी गई। प्रषिक्षण के दौरान उन्हें यह बताया गया कि वह कैसे सूफी समाज के बीच जाकर बताएंगे कि भाजपा ने अल्पसंख्यकों के लिए क्या-क्या किया है?

अल्पसंख्यक मोर्चे के प्रदेश अध्यक्ष कुंवर बाशित

अली ने बताया कि इस अभियान से उलमा, मौलाना और सूफी मुस्लिम जोड़े जाएंगे। इसके लिए सूफी समाज भी साथ आया है। उनके साथ भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के पदाधिकारी, अल्पसंख्यक वर्ग के मंत्री मुस्लिम वर्ग के बीच जाएंगे। वे इस समुदाय का पूर्वाग्रह तोड़ने की कोशिश करेंगे। यह भी बताया जाएगा कि मुसलमानों के जीवन में बदलाव लाने के लिए भाजपा की प्रदेश और केंद्र सरकार क्या कर रही है। भाजपा करीब एक हजार मजारों और दरगाहों पर पहुंचेगी।

ये संवाद उन लोकसभा क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर आयोजित किए जाएंगे, जहां मुस्लिम आबादी 20 प्रतिशत या इससे अधिक है। सेमिनार, संवाद के साथ मुस्लिम समाज के लोगों के घरों तक पहुंचकर भी बात की जाएगी। सूफी संवाद कार्यक्रम में भाजपा के बड़े नेता, केंद्रीय और यूपी सरकार के मंत्री और अल्पसंख्यक वर्ग के नेता दरगाहों पर कव्वाली सुनेंगे और सूफी नाइट में शामिल होंगे। वहीं, बाशित अली कहते हैं कि हम यह नारा दे रहे हैं कि न दूरी है न खाई है, मोदी हमारा भाई है। भाजपा पसमांदा मुसलमानों के बाद अब सूफी समाज के जरिए सभी अल्पसंख्यकों को रिझाने में जुट गई है।

अरब देशों की तर्ज पर बनेगी .'मस्जिद-ए-अयोध्या'

मस्जिद परिसर में बनेगा 300 बेड का कैंसर अस्पताल

लोक पहल

अयोध्या। राम मन्दिर निर्माण के साथ ही उच्चतम न्यायालय ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद के निर्माण किये जाने का फैसला भी दिया था। मुस्लिम पक्ष की ओर से प्रस्तावित 'मस्जिद-ए-अयोध्या' का भव्य निर्माण कराया जा रहा है लेकिन अब मस्जिद के डिजाइन में परिवर्तन किये जाने की खबरें आ रही है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद मामले में 2019 में सुनाए गए फैसले के तहत मुस्लिम पक्ष को अयोध्या में मिली 5 एकड़ जमीन पर प्रस्तावित 'मस्जिद-ए-अयोध्या' का डिजाइन अब बदल दिया गया है। यह मस्जिद अब मध्य पूर्व और अरब देशों में बनने वाली भव्य मस्जिद की तर्ज पर बनेगी। इसका नाम पैगंबर मोहम्मद साहब के नाम पर रखा जाएगा।

अयोध्या के धन्नीपुर में मिली 5 एकड़ जमीन पर मस्जिद, अस्पताल और अन्य सुविधाओं के निर्माण के लिए बने 'इंडो इस्लामिक कल्चरल फ

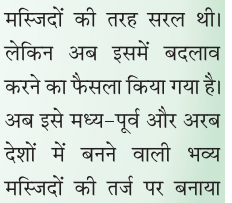

उंडेशन' ट्रस्ट के अध्यक्ष जुफर फारुकी ने बताया कि मस्जिद ए-अयोध्या का डिजाइन अब बदल दिया गया है।

फारुकी ने बताया कि मस्जिद का नाम पैगंबर मोहम्मद के नाम पर रखा जाएगा। इसके अलावा पहले इसकी डिजाइन भारत में बनने वाली मस्जिदों की तरह सरल थी। लेकिन अब इसमें बदलाव करने का फैसला किया गया है। अब इसे मध्य-पूर्व और अरब देशों में बनने वाली भव्य मस्जिदों की तर्ज पर बनाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि पुणे के आर्किटेक्ट ने इसकी डिजाइन तैयार की है। इसे मुंबई में हुई बैठक में अंतिम रूप दिया गया। यह मस्जिद पिछली मस्जिद के डिजाइन के मुकाबले आकार में बड़ी होगी। इसमें बड़ी जगह होगी और एक साथ 5000 से ज्यादा नमाजी नमाज अदा कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि मस्जिद में 300 बेड वाला कैंसर अस्पताल भी बनाया जाएगा।

सुरेश खन्ना ने किया मिशन शक्ति अभियान का शुभारंभ, महिलाओं को किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। गांधी भवन प्रेक्षाग्रह में मिशन शक्ति फेस 4 का शुभारंभ किया गया। मिशन शक्ति का थीम 'नारी सुरक्षा नारी सम्मान नारी स्वावलंबन' है। कार्यक्रम का शुभारंभ वित्तमंत्री सुरेष कुमार खन्ना ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया।

इस मौके पर मंत्री सुरेष खन्ना ने कहा कि अब महिलाओं को समाज में नंबर दो का दर्जा देने वाली मानसिकता में बदलाव आ रहा है यह बदलाव महिला आरक्षण एक्ट जैसी सरकार की अन्य कई महत्वपूर्ण योजनाओं तथा नीतियों का परिणाम है। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने सरकार द्वारा चलाई जा रही महिला योजनाओं के संबंध में विस्तार से बताया। इस दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाली पुलिस विभाग से गीता तथा नीलम तोमर, सफाई कर्मचारी सुनीता तथा संगीता, बीसी सखी सोनी, डीआईओएस ऑफिस में कार्यरत नेहा मिश्रा, चिकित्सा विभाग में कार्यरत पूनम तथा अनीता मौर्या आदि महिलाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. इंदु अजनबी ने किया।

कार्यक्रम में महापौर अर्चना वर्मा, राज्य सभा सांसद मिथिलेश कुमार, सांसद अरुण कुमार सागर, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, सीडीओ श्याम बहादुर सिंह, एडीएम प्रशासन संजय कुमार पांडे, जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव कुमार मिश्रा, जिला समाज कल्याण अधिकारी वंदना सिंह, भाजपा महानगर अध्यक्ष षिल्पी गुप्ता आदि मौजूद रहे। समेत अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी तथा जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

जय भारत संस्था ने किया विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

अग्रसेन महोत्सव में बच्चों ने झटके पुरस्कार

लोक पहल

शाहजहांपुर। महाराजा अग्रसेन स्मृति महोत्सव की श्रृंखला में सामाजिक संस्था जय भारत की ओर से भावल खेड़ा विकासखंड के जमालपुर प्राथमिक विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय यादव एवं जय भारत संस्था के अध्यक्ष राजीव कृष्ण अग्रवाल ने मां शारदे एवं भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम में लीड कॉन्वेंट स्कूल डॉक्टर एम लाल मेमोरियल स्कूल, प्राथमिक विद्यालय जमालपुर प्राथमिक विद्यालय दादोरिया प्राथमिक विद्यालय कुरसंडा प्राथमिक विद्यालय भावल खेड़ा आदि विद्यालयों के बच्चों ने भाग लिया। कविता पाठ प्रतियोगिता में जमालपुर की अंशिका ने प्रथम स्थान प्राप्त कर जय भारत अवार्ड पर कब्जा किया द्वितीय स्थान पर एम लाल मेमोरियल स्कूल के देवांश सिंह रहे तृतीय स्थान पर मूवीअंसारी लीड कान्वेंट स्कूल के रहे म्यूजिकल चेयर में मुक्त प्रथम मृदुल द्वितीय एवं आदित्य तृतीय स्थान पर रहे 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में बालक वर्ग में आयुष प्रथम अनुराग द्वितीय हार्दिक सैनी तृतीय एवं बालिका वर्ग में कंचन प्रथम रियाद सेकंड एवं प्रज्ञा सैनी तृतीय स्थान पर रही। इस दौरान अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए सभी विजेता प्रतिभागियों को जय भारत अवार्ड एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।अंत में प्रधानाचार्य अभिषेक दीक्षित ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर डॉ. मयंक भूषण पांडे, रमन गुप्ता , पूजा अग्रवाल, संजय त्रिपाठी, प्रियंका गोस्वामी , स्वीटी वर्मा, राजेश्वरी वर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

श्री गणेश शोभायात्रा से भक्तिमय हुआ शहर

हवन-पूजन के साथ खिरनीबाग रामलीला का मंत्री सुरेश खन्ना ने किया शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री रामलीला समिति खिरनीबाग की ओर से प्रदेष के वित्तमंत्री सुरेष कुमार खन्ना की अगुवाई में श्री गणेश शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होकर गुजरी और पुष्पवर्षा कर स्वागत हुआ। खिरनीबाग स्थित जीआईसी खेल मैदान पर हवन-पूजन के साथ श्री रामलीला मेला का शुभारंभ हो गया।

गांधीगंज में वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने भगवान राम-सीता व हनुमानजी के रथ को खींचकर शोभायात्रा का शुभारंभ किया। शोभायात्रा में गणेश भगवान की प्रतिमा, शंकर-पार्वती, मां दुर्गा, मां सरस्वती, लक्ष्मी-नारायण व वरुण समेत अनेक देवी-देवताओं की झांकियां शामिल रहीं। भगवान राम-सीता, हनुमानजी, भरत, लक्ष्मण शत्रुघ्न के स्वरूप रथ पर सवार रहे। हाथी, घोड़े, बैंड, ढोल-नगाड़ा के साथ डीजे पर विभिन्न धार्मिक गीतों की मधुर धुन के साथ बहुत ही मनमोहक दृश्य देखकर अनेक श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बन रहा था।

शोभायात्रा केरूगंज चौराहा, रंग महला, छोटा चौक, बड़ा चौक, कच्चा कटरा, मालखाना मोड़, घंटाघर, मशीनरी मार्केट, सदर बाजार होते हुए खिरनीबाग में जीआईसी खेल मैदान पर पहुंची।

इस दौरान मेला समिति के अध्यक्ष अशोक अग्रवाल, वीरेंद्र पाल सिंह यादव, सुरेश सिंघल, नरेंद्र मिश्रा (गुरु), नीरज वाजपेयी, विनोद अग्रवाल, चंद्रशेखर खन्ना उर्फ धीरू, राम मोहन वर्मा, हितेश अग्रवाल, ऋषि कपूर, कुणाल अग्रवाल, वेद प्रकाश मौर्य, राज नारायण गुप्ता, अनूप गुप्ता, सुरेंद्र सिंह सेठ, अंशुल गुप्ता आदि शामिल रहे।

गायत्री परिवार की ओर से भव्य दीप यज्ञ का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के निमित्त शांतिकुंज हरिद्वार से आया शक्ति कलश गायत्री शक्तिपीठ गौहरपुरा से कनेंग सेहरामऊ बादशाह नगर क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में पहुचा और जन जागरण किया। इस अवसर पर सेहरामऊ मे भव्य दीप यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युग ऋषि संदेशवाहक सूरज वर्मा ने कहा कि गायत्री का अर्थ होता है सद्बुद्धि। इस सद्बुद्धि को जन-जन तक पहुंचाने के लिए गायत्री साधना हर व्यक्ति को करनी चाहिए जिससे उसका परिशोधन हो।

इससे पूर्व गायत्री परिजन भगवान सिंह, वीरपाल सिंह ने शक्ति कलश का पूजन कर स्वागत किया। गांव में जगह-जगह शक्ति कलश का स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में अहिवरन, रवि, भरत सिंह, सुनील रस्तोगी, धर्मवीर वर्मा, विक्रम सिंह आदि शामिल रहे। इस दौरान सेहरामऊ गांव में प्राचीन बाबा कालसेन मंदिर में भव्य दीपयज्ञ संपन्न हुआ।

शक्ति कलश के साथ सूरज वर्मा, सविता, ज्ञान प्रकाश, रामपाल आदि मौजूद रहे।

शिकायत मिलने पर मेडिकल कालेज पहुंचे डीएम

मरीजों को गलत जानकारी देकर पैसा वसूलने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही के दिए निर्देश

लोक पहल

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने मेडिकल कालेज का औचक निरीक्षण किया। अस्पताल में भर्ती मरीजों से उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली तथा आने वाले मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने व साफसफाई की व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पर्ची काउंटर, हेल्थ डेस्क, सर्जन कक्ष, दवा वितरण कक्ष, महिला ओपीडी कक्ष, आईसीयू कक्ष, जनरल महिला व पुरुष वार्ड, आपातकालीन कक्ष तथा एक्सरे कक्ष व बाल रोग कक्ष आदि का निरीक्षण किया। डीएम ने करीब एक घंटा जिला अस्पताल में घूम कर मरीजों से बात की तथा उनका हाल जाना। स्टाफनर्सो की लापरवाही सामने आने पर जिलाधिकारी ने कड़ी फटकार लगाई। निरीक्षण के दौरान इमरजेंसी में डॉ. अनुराग पाराशर उपस्थित मिले। जिलाधिकारी ने मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य राजेश कुमार को निर्देशित किया कि बाहर की ओर भी एक हेल्प डेस्क बनवाये जिससे कि आने वाले मरीजों को सहायता मिल सके। जिलाधिकारी ने सख्त निर्देश देते हुये कहा कि प्राप्त शिकायत के अनुसार संलिप्त लोगो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। जिलाधिकरी ने प्राचार्य राजेश कुमार को निर्देश दिये कि इस प्रकार की लापरवाही बिल्कुल न बरती जाये। उन्होने कहा कि मरीजों को गलत जानकारी देकर बहकाने वालो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जाये।

डीएम ने सूचना विभाग में प्रदर्शिनी का किया शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, नीतियों, उपलब्धियां, विकास कार्यक्रमों के प्रचार प्रसार हेतु एवं सबका साथ सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास, विषयक तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन जिला सूचना कार्यालय में किया गया। प्रदर्शिनी का शुभारंभ डीएम उमेश प्रताप सिंह ने फीता काटकर किया। जिलाधिकारी ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा प्रदर्शनी की सराहना भी की। उन्होने कहा कि प्रदर्शनी के माध्यम से सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, नीतियों, उपलब्धियां, विकास कार्यक्रमों का लाभ जनता को होगा। उन्होने कहा कि उक्त प्रदर्शनी का प्रचार प्रसार किया जाये जिससे सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनता को हो सके।

समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी है वाणिज्य की शिक्षा : डा. अवनीश

डॉ पुनीत मनीषी की किताबों का हुआ विमोचन

लोक पहल

शाहजहांपुर। जीएफ कालेज के वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. पुनीत कुमार श्रीवास्तव 'मनीषी' द्वारा लिखित कॉमर्स की दो पुस्तकों का विमोचन जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र पाल सिंह यादव, एसएस लॉ कॉलेज एवं एसएस कॉलेज के सचिव डॉ. अवनीश कुमार मिश्र, बाल साहित्यकार तथा जीएफ कॉलेज के प्रोफेसर अरशद ने किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ ए. के. मिश्रा ने कहा की कॉमर्स का क्षितिज इतना विशाल और उपयोगी है कि समाज के प्रत्येक अंग को वह प्रभावित करता है, फिर चाहे वह दैनिक जीवन हो या व्यापारिक जीवन हो या राजनीतिक जीवन हो। डॉ. पुनीत मनीषी ने कॉमर्स की जटिलतम विद्या पर सहज एवं सरल शब्दों में पुस्तक लिखकर बच्चों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन किया है। डॉ. मिश्रा ने कहा कि जो व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। उसे अनवरत संघर्ष करना होगा। उन्होंने कहा कि सांख्यिकी के व्यापक प्रयोग के कारण आधुनिक युग को सांख्यिकी का युग कहा जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सांख्यिकी का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ मिश्रा ने दूसरी पुस्तक निगमीय लेखाकन पर बोलते हुए कहा कि कॉर्पोरेट लेखांकन प्रक्रिया में पहला कदम वित्तीय लेनदेन को रिकॉर्ड करने के लिए एक प्रणाली स्थापित करना है। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल सिंह यादव ने कहा की डॉ.मनीषी एक शिक्षाविद के साथ ही समाजसेवी, राजनीतिज्ञ एवं खिलाड़ी के रूप में समाज-में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। जीएफकॉलेज के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ. अरशद खान ने कहा कि मैं एक लेखक होने के नाते जानता हूं कि लेखन कार्य कितना कठिन होता है। एस एस कालेज के इतिहास बिभागाध्यक्ष डॉ विकास खुराना, कोडिनेटर नेव इंटरमीडिएट कॉलेज डा. विकास पांडे ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अंत में ओंकार मनीषी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन कुलदीप दीपक ने किया। प्रारंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। पुनीत मनीषी ने अतिथियों का माल्यार्पण, बैच तथा शाल ओढ़ाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर मो. इरफान, सुयश सिन्हा, सरदार शर्मा, डॉ. अनमोल सक्सेना, डॉ. विनीत सैनी, डॉ विजय कुमार गुप्ता, डॉ. योगेश अवस्थी, नरेंद्र सक्सेना राम कुमार, डा. रामनिवास गुप्ता, पीयूष मिश्रा, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, आयुष रस्तोगी, पलक, आँचल, साक्षी, सदमान के साथ तमाम छात्र- छात्राएं उपस्थित रही।

मनोवृत्तियों को अनुशासन में रखकर जीवन को बनाएं सार्थक : करूणानंद

लार्ड बुद्धा एजुकेशनल एण्ड कल्चरल सोसाइटी के तत्वावधान में धम्म देशना का आयोजन

शाहजहांपुर। लार्ड बुद्धा एजुकेशनल एण्ड कल्चरल सोसाइटी के तत्वावधान में पुवायां रोड स्थित बुद्ध बिहार में 5 दिवसीय धम्म देशना का शुभारंभ बुद्ध वंदना से हुआ।

भंते डॉ. स्वरुपानंद महास्थविर (वाराणसी) तथा भंते करुणानंद (बालामऊ) ने उपासकों को त्रिसरण ग्रहण कराने के उपरांत धम्म के अनुशासन पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि 10 पारमिताओं को अपनाते हुए अपनी मनोवृत्तियों को अनुशासन में रखकर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। मनुष्य को असत्य और प्रमाद से स्वयं को बचाकर चलना चाहिए।

पूर्व में सोसायटी के प्रांतीय अध्यक्ष सुरेश पाल सिंह ने अतिथि भंतेजनों का स्वागत किया। इस अवसर पर भगवंत राम, जगदीश प्रसाद, जगदीश चंद्रा, डॉ. वाई.पी. गौतम, कवि ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान', अनूप कुमार एडवोकेट, राजेश्वर सिंह, बृजेश कुमार, शैलेन्द्र गौतम, रामसेवक गौतम, विनोद छावला, योगेश कुमार, शीलांकर बौद्ध, रामजीत दिवाकर, तोताराम बौद्धाचार्य, बृजपाल, अमन कुमार, स्थानीय विहाराधीश चंद्र रतन महाथेरा सहित काफी संख्या में उपासक उपासिकाएँ उपस्थित रहे। धम्म देशना के अंत में एस एल गौतम ने आभार व्यक्त किया।

बेमिसाल है ओसीएफ रामलीला, देती है कौमी एकता का संदेश

कुलदीप 'दीपक'

- ओसीएफ रामलीला के मंच से निकलकर राजपाल यादव ने बॉलीवुड में हासिल की शोहरत
- हिन्दू, मुस्लिम, सिख इसाई सभी धर्मों के लोगों का रहता है योगदान

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में अनेक क्षेत्रों में श्रीरामलीला का मंचन होता है मगर इनमें फैक्ट्री इस्टेट श्रीरामलीला का मंचन सबसे अलग और बेमिसाल है। वजह ये है कि इसके मंचन में हर मजहब के कलाकारों की बराबर की हिस्सेदारी है। यहां मुस्लिम समाज से अरशद आजाद परशुराम समेत कई भूमिकाओं का निर्वाह करते हैं जबकि मोहम्मद सुहेल विश्वामित्र का किरदार निभाएंगे। वहीं इसाई समाज से पैट्रिक दास और सिख समाज से सरदार एस एन सिंह और हिन्दू समाज से कलाकारों की संख्या अच्छी खासी है। बताते चलें कि फैक्ट्री इस्टेट श्रीरामलीला का मंचन 1966 में शुरू हुआ। इससे पहले फैक्ट्री मंदिर परिसर में कलाकारों की मंडली बुलाकर धार्मिक नाटकों का मंचन कराया जाता था। फैक्ट्री की गोल्डन जुबली के बाद अनेक फैक्ट्री कर्मचारियों के चेहरे कलाकार के रूप में सामने आए तब श्रीराम लीला मंचन करने पर कलाकारों ने विचार बनाया। फैक्ट्री से जुड़े कलाकार वर्तमान में 80 वर्ष के पंडित ओमदेव मिश्रा बताते हैं कि पहले मंदिर परिसर में ड्रामा होता था मगर तत्कालीन जीएम एस एन गुप्ता से जगदीश लोहिया ने श्रीरामलीला मंचन कराने की इच्छा जाहिर की। सवाल उठा कि इसके लिए धन कहां से आएगा। तब जीएम गुप्ता ने सौ रुपए का पहला चंदा दिया। इसके बाद पांच हजार का चंदा फैक्ट्री कर्मचारियों से जुटाया गया। यह चंदा नाकाफी था मंचन के लिए। तब मैं गुरू जी के साथ भोलागंज में सेठ जानकी प्रसाद अग्रवाल से मिला और अपनी मंशा बतायी। तब सेठ जानकी प्रसाद ने बीस हजार की मदद की। लेकिन शर्त रखी कि भरत मिलाप उनके यहां होगा। काफी समय तक ये परंपरा चलती रही। श्री मिश्र बताते हैं। उस समय के कलाकारों में रंगी लाल शुक्ला, पूरन यादव, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, महेश प्रसाद श्रीवास्तव आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे। इसके बाद नए कलाकार आते गए और मंचन बेमिसाल होता चला गया। ओमदेव मिश्रा कहते हैं कुछ समय बाद सहायक महाप्रबंधक जीएस नारंग आए तो आमदनी का जरिया खोज निकाला गया। इसके लिए उन्होंने रामलीला मैदान में प्रदर्शनी लगानी शुरू कराया, दुकानों से किराया आने पर कमेटी की आर्थिक स्थिति मजबूत होती गई। रामलीला का यह स्वरणकाल था। इसके बाद महेश सक्सेना, महेश चंद्र श्रीवास्तव, चंद्रमोहन महेंद्र, ओम प्रकाश त्रिवेदी, नरदेव मिश्र, राकेश श्रीवास्तव, मनोज मंजुल, कुलदीप दीपक, सरीखे कलाकार आते रहे और रामलीला का मंचन और संवरता निखरता चला गया। उन्होंने बताया कि जब एमके कंचन रामलीला कमेटी के सचिव बने तब रामलीला

मंचन के सुधार को बहुत काम हुआ। कलाकारों के समर्पण से मंचन नित नई ऊंचाइयां छूता रहा। यहां रामलीला में हर धर्म के लोग श्रीराम की लीला का मंचन करते हैं चाहें इसाई समाज से ताल्लुक रखने वाले पैट्रिक दास जो रामलीला के निर्देशक भी है और राजा दशरथ का किरदार भी निभा रहे हैं। युवा कलाकार अरषद आजाद परशुराम की भूमिका अदा कर कौमी एकता की मिसाल कायम कर रहे हैं। इसी तरह सरदार एसएल सिंह अगस्त मुनि का रोल निभाते हैं। इस कौमी एकता को बनाए रखने का काम किया है वरिष्ठ रंगकर्मी सत्यनारायण जुगनू ने। इसी तरह शाहजहांपुर का फैक्ट्री रामलीला मंच पूरी दुनिया को कौमी एकता का संदेश देकर शहीद अशफाक उल्ला खां और पं रामप्रसाद बिस्मिल की साझी शहादत और साझी विरासत को जिंदा रखे है। वक्त के साथ कलाकारो के चेहरे की चमक पर महंगाई की गर्द जमने लगी है। कलाकारो के चेहरे को पात्रों के अनुरूप बनाने वाले शाहजहांपुर के मेकअप मैन नरेन्द्र सिंह सोनू बताते हैं कि मुख सज्जा का सामान लगातार महंगा हो रहा है जब से टीवी चैनलों पर नाटक आने लगे है तब से सजे धजे टीवी कलाकारो के स्टाइल में ही उन्हें पात्रों की मुख सज्जा करनी पड़ती है।

वह बताते हैं कि सौन्दर्य प्रसाधन के सामानो पर पिछले साल की अपेक्षा इस वर्ष 20 से 30 प्रतिशत तक महंगाई बढ़ी है यही हाल पोशाकों और मंचन में इस्तेमाल होने वाले अन्य सामान का भी है। बहरहाल इस वर्ष भी रोहित सक्सेना, देवेन्द्र पाल, अंकित सक्सेना, मोहित कनौजिया, अरूण उर्फ डीआर, मेहताब, रानी मिश्रा, रजनी, लक्ष्मी सक्सेना, प्रियंका, साधना, नैना, सतीश सक्सेना, राजीव सिंह, कुलदीप श्रीवास्तव मंच और उसके परे अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

शाहजहांपुर जिले के फिल्म अभिनेता राजपाल यादव तो शाहजहांपुर की फैक्ट्री स्टेट रामलीला मंच पर कई साल तक 'अंगद' की भूमिका निभाते रहे हैं। ओसीएफरामलीला की गूंज विदेशों में भी सुनाई देती है जब फ्रांस में विश्व की रामलीलाओं की समीक्षा हुई तो फैक्ट्री रामलीला को मंचन में दूसरे स्थान पर रखा गया। इस बार मंचन की कमान अंकित सक्सेना और पैट्रिक दास के कंधों पर है। फ्लिहाल देश विदेष में प्रसिद्ध ओसीएफ रामलीला भी धीरे-धीरे राजनीति का शिकार होती जा रही है यहां चाटुकारों की जय जयकार है। रामलीला के जरिए समाज को सत्याचरण की सीख देने वाले फनकार सियासत की चादर ओढ़कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। फैक्ट्री के अधिकारियों को राजनीति के सिपहसालार गुमराह कर झूठ का आईना दिखा रहे हैं। राम को सत्य का पर्याय माना जाता है मगर मंचन से सत्य गायब है। बहरहाल इस बार भी श्रीरामलीला का मंचन होने जा रहा है लेकिन तमाम कलाकार मंच पर हावी राजनीति से आहत हैं।

धर्म में राजनीति होना गलत : ओमदेव मिश्र

शाहजहांपुर। ओमदेव मिश्र अब अस्सी के करीब पहुंच रहे हैं। 1966 में जब से ओसीएफ रामलीला शुरू हुआ तब से वह वहां मंचन करते रहे। तकरीबन दो दशक तक मंच पर छाए रहे। आमतौर जनक और व्यास की भूमिका निभाते रहे। वे बताते हैं कि जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव उर्फगुरू ने इस्टेट में मंदिर निर्माण का संकल्प लिया। ओसीएफ में पहले जीएम की पोस्ट नहीं थी। गुरू ने अंग्रेज सुप्रिडेंट से उसके दफ्तर में जाकर मंदिर बनाने के लिए जगह और इजाजत मांगी लेकिन नहीं मिली। उन्होंने अफ्सर से कहा कि मंदिर तो बनेगा। तुम रोक नहीं सकते। इस पर अफ्सर नाराज हो गया और उसने गुरू की चरित्र पंजिका में लिख दिया कि कार्यालय अधीक्षक पद से ऊपर उनका प्रमोशन न दिया जाए। पहले जीएम के रूप में आए एसएन गुप्ता से बात कर मंदिर का निर्माण कराया। जीएम से बात कर 1966 में रामलीला का श्री गणेश हुआ। दो दशक तक मैंने मंचन किया पर सेवानिवृत्त होने के बाद सम्मान बचाने को मंच छोड़ दिया। कहा धर्म में राजनीति नहीं राजनीति में धर्म होना चाहिए।

ओसीएफ रामलीला मंचन और प्रदर्शनी का शुभारंभ 15 अक्टूबर को

- ओसीएफमेला में निर्माणी के लगेंगे 'आउटलेट्स'
- निर्माणी के वरिष्ठ महाप्रबंधक अखिलेश कुमार ने पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

लोक पहल

शाहजहांपुर। देश प्रदेश में प्रख्यात शाहजहांपुर की ओसीएफ रामलीला मंचन एवं प्रदर्शनी का आयोजन पूरी भव्यता के साथ किया जाएगा। रामलीला मंचन और प्रदर्शनी का शुभारंभ 15 अक्टूबर को ओसीएफ महिला कल्याण समिति की अध्यक्ष पूनम सक्सेना करेगीं। यह जानकारी निर्माणी के वरिष्ठ महाप्रबंधक अखिलेश कुमार ने पत्रकार वार्ता में दी। श्री अखिलेश कुमार ने बताया कि इस बार 56वां मंचन हो रहा है। मेले में सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए जा रहे हैं। खुफिया तंत्र के साथ कैमरों से अराजक तत्वों पर नजर रखी जाएगी। पार्किंग चारों तरफनहीं तीन स्थान पर होगी। झूलों की रेट निर्धारित कर दिए गए हैं। रामलीला मंचन के दौरान दर्शकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मैदान के बीच में 40 से 50 फीट चौड़े रास्तों की व्यवस्था की गई है। मेले में दर्शकों के लिए पीने का

पानी तथा शौचायलयों का समुचित प्रबंध किया गया है। इसके साथ ही मेले में प्रकाश व्यवस्था को और अधिक बेहतर बनाया जा रहा है बच्चों के मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े झूले व खेल तमाशे भी लगाए जा रहे हैं झूले वालों को सेफ्टी मानकों को पूरा करने तथा संबंधित विभागों से प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होगा मेडिकल तथा फायर ब्रिगेड कैंप भी लगाया जा रहे हैं जिनमें एंबुलेंस तथा फायर ब्रिगेड वहां उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने बताया कि इस बार आयुध वस्त्र निर्माणी के उत्पादों का एक भव्य स्टाल मेले में लगाया जाएगा जिसमें सारे प्रोडक्ट आम जनता के लिए उपलब्ध रहेंगें। सूचना प्रसार के लिए, उप महाप्रबंधक अनु सक्सेना को अध्यक्ष, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी प्रकाश चन्द्र को सचिव बनाया गया है। गोविंद कृष्ण वाजपेयी, देवेंद्र कुमार सक्सेना, राजेश कंचन, पैट्रिक दास, राजीव सिंह, अरविंद कुमार, मुकेश कुमार, राहुल, गोपाल कृष्ण को सदस्य नामित किया गया है। चार नवंबर को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन व मुशायरे का आयोजन किया जाएगा। वार्ता के दौरान अपर महाप्रबंधक अभिजीत वणिक, डॉ एके आर्या, एचके अग्रवाल, दिनेश कुमार सक्सेना, अरुण कुमार वर्मा आदि मौजूद रहे।

आत्म सम्मान बचाने को छोड़ा ओसीएफ रामलीला का मंचः महेश

शाहजहांपुर। ओसीएफरामलीला में मेघनाथ का किरदार निभाने वाले महेश सक्सेना पारसी थियेटर के बेताज बादशाह हैं। बताते हैं कि वह फैक्ट्री इस्टेट में ही रहते थे। 1966 में ओसीएफ का रामलीला शुरू हुआ। मैं भी इस पवित्र मंच से जुड़ गया। दो साल तो राजकुमार और इसी तरह के साइड रोल किए मगर बाद में उन्हे रावण पुत्र मेघनाद का किरदार मिला। सबसे पहले उनके साथ सुलोचना का किरदार राजेश सक्सेना ने किया। इसके बाद चित्रा सिनेमा में टिकट वितरक महेश सक्सेना ने काफी समय तक सुलोचना की भूमिका अदा की। सत्यनारायण जुगनू बहुत बाद में मेरे साथ सुलोचना के रोल में उतरे, लेकिन मेरे अनुसार सबसे उम्दा किरदार चित्रा वाले महेश का रहा। प्रस्तुति और उच्चारण उनका बेमिसाल रहा। कहते हैं कि इस बीच उन्होंने शिव, आचार्य रावण और न जाने ही कितने पात्रों को मंच पर निभाया। बोले तब मंचन विशुद्ध रामायण पर आधारित था। जगदीश गुरू, महेश प्रसाद श्रीवास्तव और महावीर श्रीवास्तव तीनों रामायण के मर्मज्ञ थे। बोले मैंने एक बार राम का किरदार भी निभाया। धनुष यज्ञ की लीला होनी थी। राम का रोल ओमप्रकाश त्रिवेदी को करना था, किसी कारण उन्हें लेने गाड़ी नहीं पहुंच सकी, वह नहीं आए तो उन्हें ही श्रीराम का पाठ अदा करना पड़ा। रफ्ता रफ्ता मंचन प्रभावी होता चला गया। वह 2006 में फैक्ट्री से रिटायर हो गए। उन्हें लगा कि अब पहले सा सम्मान नहीं मिल रहा और सियासत की जड़ें जम गई हैं और तब उन्होंने घर बैठना बेहतर समझा। कहा रामलीला को अनुष्ठान के रूप में खेलना चाहिए। जब हम खुद दिशा हीन होंगे तब समाज को सच का दर्पण कैसे दिखा सकेंगे।

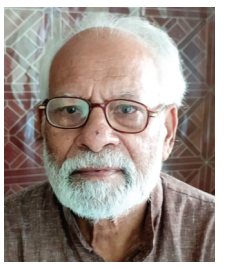

महासंग्राम के लिए सेनाएं तैयार

लोक पहल

शाहजहांपुर। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और अहंकारी रावण की सेना रामलीला के मंच पर युद्ध के लिए तैयार हो गई हैं। ओसीएफ श्रीरामलीला मेले के मंचन के लिए कलाकारों का अभ्यास अंतिम चरण में पहुंच गया है। किरदारों को जीवंत करने के लिए इस बार खास तैयारी की गई हैं। ओसीएफमैदान में रामलीला मंचन की शुरुआत 15 अक्तूबर से होगी। इससे पहले सेनाओं ने अपने अस्त्र-शस्त्रों को दुरूस्त करना शुरू कर दिया है।

युद्ध का ऐलान होते ही सैनिक अपने-अपने सेनापति के निर्देशन में युद्ध के लिए कूच करने को बेताब है। मंचन को भव्य और जीवंत करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। निर्देशक अंकित सक्सेना के अनुसार इस बार कई दृष्यों को विशेष प्रयोग करके सजीव करने का प्रयास किया गया है। निर्देशक के अनुसार इस बार किरदारों में कलाकारों का बदलाव नहीं किया जाएगा। पुराने चेहरे ही फिर से भूमिका निभाते नजर आएंगे। रोहित सक्सेना-श्रीराम, सीता-रानी मिश्रा, हनुमान जी-मोहित कनौजिया, रावण-अंकित सक्सेना, शत्रुघ्न-रोहित सक्सेना बनेंगे।

अंदर के रावण को मारना जरूरी

राम किसी एक व्यक्ति का नहीं एक अलौकिक शक्ति का नाम है एक चेतना का नाम है, एक प्रेरणा का नाम है और वर्तमान की सियासत को आइना दिखाने का नाम है। दरअसल राम जीवन का शाश्वत सत्य है एक ऐसी ऊर्जा है जिसमें बुराईयों से जूझने की ताकत मिलती है। आज के राम न अपनी पत्नी और न ही समाज की सुरक्षा कर पा रहे है नतीजन रावण का कद बढ़ रहा है। वह समाज पर हावी है रावण दिन दूनी रात चौगनी तरक्की कर रहा है। वह पहले से ज्यादा बलशाली है हर गांव, हर गली, नगर, डगर यहां तक कि सत्ता के गलियारों तक में रावण की गहरी पैंठ बन चुकी है। वह कभी खेत जाती नारी को अपनी हवस का शिकार बना लेता है तो कभी राह चलकर लोगो को असलहों के बल पर लूट लेता है। दुखद यह है कि आधुनिक रावण की गर्दन तक पहुंचने में रामरूपी सत्ता के कानून के हाथ काफी छोटे पड़ गये है। इसलिए रावण अन्याय, अत्याचार, अनाचार, शोषण, उत्पीड़न का प्रतीक बनकर समाज के समक्ष खड़ा है। समाज इस रावण और रावणत्व के खिलाफ खड़ा होने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। स्कूलो में दशहरा मनाने का रिवाज शुरू हो चला है इसे मनोरंजन का साधन बना लिया गया है। सोचिए हर वर्ष रावण मारने के बाद भी वह नहीं मर रहा है, पूरी शान के साथ वह डटा है उसके कद में होता इजाफा। इस बात का संकेत दे रहा है कि हम सबने रावणत्व के खिलाफमोर्चा नहीं खोला तो निश्चित तौर पर हम इसे मिटा नहीं पाएंगे। हमें दिलो में नफरत के रूप में पल रहे रावण को मारकर एक नए 'रामराज्य' की स्थापना कर समाज में समरसता स्थापित करनी होगी।

सम्पादकीय

अबकी बार सौ के पार-अंतर्राष्ट्रीय खेलों में जागी उम्मीदें

इस वर्ष चीन में आयोजित एशिआई खेलों में जब भारत का दल रवाना हुआ था तो एक नारा दिया गया था कि 'अबकी बार सौ के पार' भारत के जावांज खिलाड़ियों ने इस नारे को सही साबित करते हुए इस बार इतिहास रचते हुए 107 पदक हासिल किए हैं जो कि एक रिकार्ड है। चीन में हांगझाउ एशियाई खेलों में भारत की ओर से अलग-अलग खेलों के लिए जब टीमों को भेजा जा रहा था, उस समय यह संकल्प साफदिख रहा था कि अब मैदान में सिर्फजीतने के लिए नहीं, बल्कि उससे आगे के सफर के लिए जमीन बनाने की कोशिश होगी। इस आयोजन की समाप्ति के बाद पदक तालिका में भारत को जो जगह मिली, वह उम्मीद के अनुरूप थी, लेकिन उससे अहम बात यह है कि लगभग सभी प्रतियोगिताओं में हमारे खिलाड़ियों ने जो दमखम दिखाया, वह भविष्य की अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में एक मजबूत दखल का संकेत देता है।

एशियाई खेल 2023 में भारत ने कुल एक सौ सात पदक जीते। यह पहली बार है जब भारत ने किसी एशियाई खेल में इतने पदक हासिल किए। इससे पहले भारत का सबसे अच्छा प्रदर्शन सत्तर पदकों का था, जो 2018 में जीते गए थे। इस वर्ष उपलब्धियों की शुरुआत निशानेबाजी में महिलाओं की दस मीटर एअर राइफल टीम ने की, जिसे रजत पदक मिला। पहले दिन भारतीय खिलाड़ियों ने पांच पदक जीते। एक अच्छी शुरुआत को और बेहतर करते हुए दूसरे दिन एअर राइफल में ही पुरुष टीम ने पहला स्वर्ण पदक जीता और इस दिन भारत के पदकों की संख्या ग्यारह हो गई। इसके बाद अन्य खेलों में भी भारत के खिलाड़ियों ने बेहतर प्रदर्शन किए और मैदान में जीत दर्ज करते गए।

घुड़सवारी, तीरंदाजी, मुक्केबाजी, टेनिस, स्क्वैश, नौकायन, भाला फेंक, एथलेटिक्स आदि कई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने मजबूत चुनौतियों का सामना करते हुए कांस्य, रजत और स्वर्ण पदक अपने हिस्से किया और इस तरह पदकों की तालिका में देश को एक सम्मानजनक पायदान पर पहुंचाया। इस बार खासतौर पर भारत की पुरुष हाकी पर सबकी नजर थी, जिसके सामने कई मजबूत टीमों की चुनौती थी। फाइनल में जापान को भारतीय जीत की राह में एक ठोस दीवार माना जा रहा था। मगर भारतीय हाकी टीम ने इस प्रतियोगिता में अपने दमखम की निरंतरता को कायम रखा और फाइनल में जापान को एक के मुकाबले पांच गोल से हरा कर चौथी बार खिताब अपने नाम किया।

हालांकि इससे पहले भी भारत ने तीन बार एशियाई खेलों में हाकी का स्वर्ण पदक जीता था। खासतौर पर हाकी के लिहाज से देखें तो ताजा उपलब्धि के साथ भारत ने अगले साल पेरिस में होने वाले ओलंपिक खेलों में हिस्सा लेने का अधिकार हासिल कर लिया है। इसके अलावा, इस आयोजन में भारत की महिला क्रिकेट टीम व पुरुष क्रिकेट टीम का स्वर्ण पदक जीतना इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि अब क्रिकेट को अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में वैश्विक खेल का आयाम हासिल करने में मदद मिलेगी। हांगझाउ एशियाई खेलों में भारत ने जो इतिहास रचा, वह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अब भारतीय खिलाड़ियों को महज औपचारिक उपस्थिति से आगे एक चुनौती की तरह देखा जाएगा। इसके बाद स्वाभाविक ही आगामी ओलंपिक में यह उम्मीद ज्यादा ऊंचे स्तर पर होगी कि हमारे खिलाड़ी उसमें भी एशियाई खेलों की चमक को बरकरार रखेंगे और इससे बेहतर उपलब्धियां देश का नाम रोशन करेंगे।

मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल जरूरी

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में प्रतिस्पर्धा और संघर्ष ने मानसिक तनाव को बढ़ा दिया है, ऐसे में खुद को मानसिक रूप से चुस्त दुरुस्त रखना आवष्यक है। स्वस्थ जीवन के लिए शरीर और मस्तिष्क दोनो का स्वस्थ रहना जरूरी है। सुखी जीवन यापन के लिए स्वस्थ तन-मन की अपरिहार्यता से इनकार नहीं किया जा सकता। वैश्विक स्तर पर मानसिक विकार अथवा अक्षमता एक गंभीर समस्या है। अपने देश की बात करें तो यहां भी बड़ी संख्या में लोग मानसिक और न्यूरोलॉजिकल समस्याओं से घिरे हुए है। इसलिए मन-मस्तिष्क की समस्याओं को नजर अंदाज करना उचित नहीं। फलत: मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े हुए मुद्दों के बारे में जागरूकता-प्रभावित व्यक्ति की दषा में सुधारात्मक प्रयासों के लक्ष्यगत 'विष्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस' का निर्धारण किया गया। विश्व स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाना ही इसका उद्देश्य है।

मानसिक स्वास्थ्य का तात्पर्य व्यक्ति का भावनात्मक-मानसिक दृष्टि से संपन्न होना है। सामान्यत: व्यक्ति अपनी स्वस्थ मन:स्थिति में जीवन की समस्याओं-संघर्षों का सामना करने का सामर्थ्य रखता है। स्वस्थ, सकारात्मक और गतिशील समाज के लिए मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना सामयिक आवश्यकता है। मानसिक रोग व्यक्ति के सोचने- समझने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति समाज में सकारात्मक अनुभूति नहीं कर पाता। अनुवांशिकता, मानसिक आघात, पारिवारिक विवाद, मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन, शैक्षणिक तथा कैरियर दबाव, असफलता, अतिरिक्त कार्य बोझ, विषम सामाजिक परिस्थितियां आदि अनेकानेक कारण मानसिक स्वस्थता को प्रभावित करते हैं। परिवर्तित जीवन शैली के दुष्प्रभाव में उत्पन्न तनाव के छिपे हुए कारणों से भी इंकार नहीं किया जा सकता। मानसिक दबाववश फोबिया, अल्जाइमर, मेंटल स्ट्रेस, डिप्रेशन, डिमेंशिया, एंग्जायटी, जैसी बीमारियां अधिक दिखाई देने लगी हैं। यही नहीं, उच्च शिक्षित युवा भी इससे ग्रसित देखे जा सकते हैं।

मानसिक रूप से विपन्न व्यक्ति को भी गरिमा के साथ जीवन जीने का अधिकार है, इस दृष्टि से परिवेश में अनुकूलता का लक्ष्य होना चाहिए। विश्व पटल पर मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण एक प्राथमिक आवष्यकता है। मानसिक स्वास्थ्य के इस सार्वभौमिक मानव अधिकार को संरक्षित रखने के लिए जन चेतना

प्रसारित होना चाहिए। विडम्बना की बात तो यह है कि हमारे समाज में कदाचित् मानसिक रोगों के प्रति सकारात्मक नजरिया नहीं देखा जाता। विषम परिस्थितियों के चलते शारीरिक रोग की तरह ही मानसिक रोग को भी ग्रहण किया जाना चाहिए। यह भी विषेष रूप से ध्यातव्य है कि ऐसे व्यक्तियों के साथ भेदभाव करना सर्वथा अव्यावहारिक है। मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए समाज द्वारा स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने की प्रबल अपेक्षा है। कई बार ऐसा भी होता है कि रोगी अपनी समस्या किसी को नहीं बताता, अथवा मानसिक अवस्था को लेकर हीन भावना रखता है, अथवा समस्या को गंभीरता से नहीं लेता, अथवा समस्या को ही नकार देता है। बढ़ता हुआ अवसाद आत्महीनता में भी परिवर्तित हो सकता है। अतएव इस संदर्भ में उदासीनता उचित नहीं। शारीरिक स्वास्थ्य की तरह मानसिक स्वास्थ्य को भी देखरेख की आवश्यकता होती है।

मानसिक समस्या से जूझ रहे व्यक्ति के प्रति सहानुभूति, सहयोग, संवेदना, सद्भाव रखना आवष्यक है। व्यायाम करना, पुस्तकें पढ़ना, इष्ट मित्रों के साथ समय व्यतीत करना, परिवारीजनों के साथ बातचीत में सहभाग करना, अभिरुचियों में संलग्नता बढ़ाना आदि तनावग्रस्त जीवन में आराम ला सकते हैं। पारिवारिक स्तर पर रोगी के प्रति स्नेहिल व्यवहार तथा मानसिक उलझनों को साझा किया जाना चाहिए। सकारात्मक व प्रेरक विचार मस्तिष्क को सुपोषित, ऊर्जावान एवं आशावान बनाते हैं। अत: सकारात्मक सोच वाले लोगों के साथ रहना-बातचीत को बढ़ावा देना लाभकारी हो सकता है। सामाजिक सक्रियता भी एक बेहतर उपाय है। असफलताओं के बीच मिले अनुभव को केंद्रित करें, निराशा को नहीं। समस्या के दौरान तनाव के कारणों को नजर अंदाज करने का प्रयास समीचीन है। योग और संगीत भी किसी हद तक मानसिक स्थिति को शांत और एकाग्र बनाने में प्रभावकारी हैं। स्मरणीय है कि रोग की उपेक्षा स्वास्थ्य लाभ से वंचित करती है। समुचित उपचार व देखभाल के पश्चात मानसिक रोगी सामान्य धारा में लौट सकता है। बहुधा देखा जाता है कि शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति लोग जितने जागरूक होते हैं, उतने मन:स्थिति की स्वस्थता के संदर्भ में नहीं। अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। आत्म-जागरूकता अवसाद से जल्दी उबरने में सहायक बन सकती है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रभावित होने पर मानसिक चिकित्सकों से काउंसलिंग-चिकित्सा लेने में न तो संकोच करना चाहिए और न ही विलम्ब। मानसिक सेहत के संदर्भ में जाग्रति विस्तारित करने के लिए समस्या पर मुखर बातचीत जरूरी है।

अंतत: मानसिक स्वास्थ्य एक स्वस्थ समाज-राष्ट्र को रूपायित करने में अहं भूमिका रखता है। मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा सहित विविध उपायों से कल को बेहतर बनाया जा सकता है। यथा- मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए छात्रों, कर्मचारियों के मध्य जागरूकता सत्र आयोजित किए जाएं। मानसिक स्वास्थ्य के अनुभव वाले लोगों को भावनात्मक रूप से सशक्त बनाने हेतु प्रयास किए जाएं। समान स्तर पर व्यवहार करने के लिए समुदाय-समाज को प्रशिक्षित किया जाए। दूरदर्शन-सोशल मीडिया-शैक्षिक कार्यक्रमों मे इस सन्दर्भ से जुड़े हुए मुद्दों को स्थान दिया जाए। अस्तु, इस संदर्भ में परिवार-समाज की संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता आवश्यक दिखाई देती है।

प्रौद्योगिकी की मूलभूत आवश्यकता है सेमीकंडक्टर उद्योग

डा. शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

दिन प्रतिदिन विकास के नवीन आयामों को स्पर्श करती प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन में भी एक अच्छा खासा दखल दिया है। कागज, कलम, चिट्ठी एवं पत्र के जमाने आज लद चुके हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इसके उत्पादों से हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह गया है। लैपटॉप, पर्सनल कंप्यूटर, मोबाइल फोन, टैबलेट इत्यादि ऐसे उपकरण हैं जो लगभग चौबीस घंटे हमारे द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे हैं। यहां पर एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इन सभी उत्पादों के निर्माण के मूल में अर्धचालक अथवा सेमीकंडक्टर विद्यमान है। वस्तुत पदार्थों को उनके वैद्युतीय व्यवहार के आधार पर तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है- चालक, कुचालक एवं अर्धचालक। चालक वे पदार्थ हैं जिनमें विद्युत धारा का प्रवाह नितांत सुगमता से होता है। सभी धातुएं इस वर्ग में आती हैं। इसके विपरीत कुचालक अथवा अचालक ऐसे पदार्थ हैं जिनमें विद्युत धारा के प्रति पूर्ण उदासीनता होती है। और तो और, ये पदार्थ गर्म करने पर पिघल सकते हैं किंतु चालकता को कदापि स्वीकार नहीं करते। लकड़ी, कांच जैसे पदार्थ इस श्रेणी में आते हैं। इन दोनों श्रेणियों के मध्य एक ऐसा वर्ग भी है, जो चालकता अथवा प्रतिरोधकता के पैमाने पर चालक एवं अचालक के मध्य मौजूद होता है। ये पदार्थ न तो पूर्ण चालक ही होते हैं एवं न ही पूर्ण कुचालक। इन पदार्थों को अर्धचालक कहा जाता है। यद्यपि परमशून्य ताप पर ये भी कुचालकों की भांति ही व्यवहार करते हैं, किंतु ताप के उन्नयन के साथ इनमें मुक्त आवेश वाहकों की संख्या बढ़ती जाती है एवं इस कारण उनकी चालकता भी शनै:शनै: बढ़ने लगती है। एक दिलचस्प गुण जो इनको उपयोग की मापनी पर अति उच्च स्तर पर ले जाता है, वो यह है कि इनमें अत्यंत सूक्ष्म मात्रा में उचित अशुद्धि मिला देने पर इनके चालकीय गुण असाधारण रूप से बढ़ जाते हैं। यहां से एक नई कहानी की शुरुआत होती है, अपितु सच कहें तो विज्ञान की नई शाखा इलेक्ट्रॉनिकी का जन्म यहीं से होता है। सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का आधारभूत ढांचा अथवा यूं कहें कि इलेक्ट्रॉनिक्स की आत्मा अर्धचालक ही है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा भारत में सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित करने पर प्रौद्योगिकी कंपनियों को 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता देने की बात गुजरात के गांधीनगर में सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम के दौरान कही गई। यह निस्संदेह भारत को सेमीकंडक्टर का वैश्विक हब बनाने की दिशा में एक सक्रिय एवं सराहनीय कदम है। वर्तमान में सेमीकंडक्टर की मांग दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ती जा रही है। इसका कारण यह है कि इलेक्ट्रॉनिक्स आधारित उपकरणों का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। चूंकि सेमीकंडक्टर प्रत्येक क्षेत्र का आधारभूत तत्व है, लिहाजा इस क्षेत्र में रुचि के साथ-साथ आवश्यकता एवं निवेश का बढ़ना स्वाभाविक सी बात है। आंकड़े बताते हैं कि भारत का चीन से 65 प्रतिशत आयात केवल तीन क्षेत्रों- इलेक्ट्रॉनिक्स, जैविक रसायन एवं मशीनरी से होता है। 2022-23 में भारत के द्वारा लैपटॉप सहित 5.33 अरब डॉलर के पर्सनल कंप्यूटर का आयात किया गया। 2021-22 में यह आंकड़ा 7.37 अरब डॉलर का था। 2022-23 में भारत के द्वारा 77 अरब डॉलर के इलेक्ट्रॉनिक सामान का आयात किया गया। वर्तमान में सर्वाधिक उन्नत किस्म के सेमीकंडक्टर के 92 प्रतिशत का निर्माण ताइवान में होता है। सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में तीन सौ से अधिक शिक्षण संस्थानों की पहचान की गई है जिनके माध्यम से देश को सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में कुशल इंजीनियर प्राप्त होंगे। आंकड़ों के अनुसार 2014 से अब तक देश के इलेक्ट्रॉनिक उत्पादन में 7 अरब डॉलर की वृद्धि हुई है। हाल ही में अमेरिकी कंपनियों माइक्रोन एवं एएमडी के द्वारा भारत में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में क्रमश: 6800 करोड़ एवं 3300 करोड़ के निवेश का प्रस्ताव रखा गया है। एएमडी के द्वारा बेंगलुरु में एक नया अनुसंधान एवं विकास परिसर खोलने की योजना है, जो विश्व में

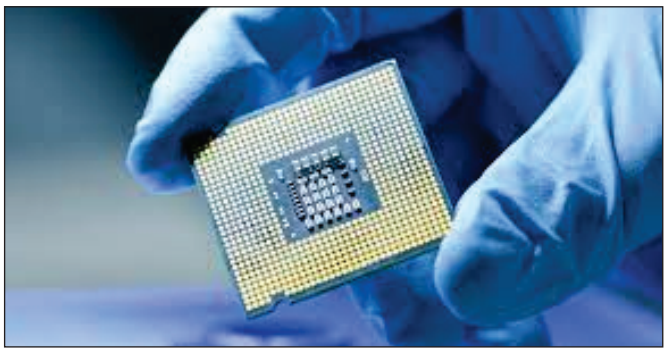

उसका सबसे बड़ा संयंत्र होगा।

वर्ष 2021 में भारत सेमीकंडक्टर मिशन का शुभारंभ किया गया, जिसका प्रमुख उद्देश्य सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाते हुए, भारत के अंदर संभावनाओं से भरपूर सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करना एवं जल्द ही भारत को सेमीकंडक्टर का वैश्विक हब बनाते हुए आयात से निर्यात के क्षेत्र में धकेलना है। वैश्विक आंकड़ों के अनुसार 2030 तक वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग का राजस्व 1 ट्रिलियन डॉलर होने की संभावना है। वर्तमान की स्थिति पर यदि नजर डालें, तो भारत में सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में शोध कार्य तो पूर्ण प्रगति पर है किंतु निर्माण कार्य अभी उन्नति के उस स्तर तक नहीं पहुंचा है जो वर्तमान की मांग है। वर्तमान में सेमीकंडक्टर का निर्माण दुनिया के चुनिंदा देशों में ही किया जाता है, जिनमें चीन, अमेरिका, दक्षिणी कोरिया, ताइवान, हांगकांग इत्यादि प्रमुख हैं। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2022-23 में भारत में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों की खपत 158 अरब डॉलर रही थी। 2016-17 से लेकर 222-23 के बीच यह खपत 11 प्रतिशत की दर से बढ़ी है। यह कहीं न कहीं चिंता की बात है कि वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग एवं इलेक्ट्रॉनिक निर्यात के क्षेत्र में अनेकों देश भारत से आगे हैं। किंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सक्रियता एवं कुशल नेतृत्व के द्वारा हम इस क्षेत्र में भी प्रगति के आकाश को छूने की तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। वर्ष 2020 में मोबाइल फोन एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्माण हेतु 40951 करोड रुपए के प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव की घोषणा की गई, जिसके बाद से इन उत्पादों की हिस्सेदारी भारत के निर्यात में लगातार बढ़ रही है। भारत शीघ्रातिशीघ्र इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था का पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करने के लिए प्रयासरत है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2023-24 के प्रथम तीन माह में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्यात में 47 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आज तमाम विदेशी कंपनियां भारत की ओर रुख कर रही हैं। एप्पल जैसी कंपनी के आईफोन का निर्माण भारत में होने लगा है। बैंक ऑफअमेरिका की रिसर्च रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2025 तक पूरे विश्व में बिकने वाले 18 प्रतिशत आईफोन का निर्माण भारत में होने लगेगा। इसका सीधा सा अर्थ है कि भारत के प्रति वैश्विक कंपनियों का विश्वास बढ़ रहा है एवं वे भारत को संभावनाओं से युक्त इलेक्ट्रॉनिकी हब के रूप में देख रही हैंएएमडी, वेदांत, फॉक्सकॉन, माइक्रोन जैसी कंपनियां सेमीकंडक्टर निर्माण को लेकर पूर्ण रूपेण सक्रिय हो चुकी हैं। इन सभी कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि एक न एक दिन चीन व दक्षिणी कोरिया जैसे देशों पर हमारी निर्भरता पूर्णतया समाप्त हो जाएगी। सेमीकंडक्टर से जुड़े पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए तीन सौ से अधिक संस्थाओं का चयन किया गया है। निस्संदेह वह वक्त शीघ्र ही आएगा जब हमें अपने ही देश से सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में कुशल इंजीनियर प्राप्त होंगे। यह भी पूर्ण रूपेण स्पष्ट है कि जब सेमीकंडक्टर एवं इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग भारत में अपने पांव पसारेगा, तो निश्चित रूप से देश के एक बड़े बेरोजगार वर्ग को रोजगार का एक साधन प्राप्त होगा। सरकार के द्वारा गठित सेमीकॉन इंडिया फ्यूचर स्किल टैलेंट कमेटी की रिपोर्ट यह कहती है कि इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग के लिए वर्ष 2030 तक 12 लाख कुशल लोगों की आवश्यकता होगी और साथ ही साथ सेमीकंडक्टर चिप के निर्माण हेतु 2.75 लाख इंजीनियरों की जरूरत होगी। वर्तमान में चीन 900 अरब डॉलर से अधिक का इलेक्ट्रॉनिक निर्यात सालाना करता है। निश्चित रूप से इलेक्ट्रॉनिक हब के रूप में अपनी छवि निर्मित करने की दिशा में हमारे समक्ष अनेक चुनौतियां हैं, किंतु यह कार्य असंभव नहीं है। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने हेतु मुख्य रूप से दो कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। पहला तो भारत के अंदर सेमीकंडक्टर संयंत्रों को प्रोत्साहन देते हुए उत्पादन बढ़ाए जाने को नीतियां सुनिश्चित करना, साथ ही साथ उन परिस्थितियों को उत्पन्न करना जो इन संयंत्रों के विकास में सहायक हों। निस्संदेह वह दिन दूर नहीं है जब देश को मेड इन इंडिया चिप मिल जाएगी और हम सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में भी आयातक से निर्यातक की भूमिका में आ जाएंगे।

गुरु गुड़ तो चेला चीनी

व्यंग्य

रीना सोनालिका
बोकारो, झारखण्ड

एक आश्रम में गुरु और शिष्य एक साथ रहा करते थे, गुरु एक पेड़ के नीचे शालिग्राम पत्थर रखकर पूजा करते थे, शालिग्राम पत्थर को पहले जल से स्नान करवाते थे,फिर दूध से अभिषेक करते थे, और फिर चंदन चढ़ाते थे, और कुमकुम...लगाते थे, उसके बाद आश्रम से बाहर जाते थे,और शिष्य को कहते थे,तुम हमारे आश्रम की देखभाल करना,और शालिग्राम पत्थर की भी देखभाल करना,देखना कहीं जंगली जानवर या पंछी इसे उठा कर नही ले जाए। गुरु की बातों को सुनकर शिष्य हां में हां मिला दिया, और बोला आप निश्चिंत होकर आश्रम से बाहर जाए, मैं सब संभाल लूंगा, शिष्य की बातो को सुनकर गुरु जी चैन की सांसे लिए, और वो आश्रम से बाहर चले गए, गुरु के जाते ही, शिष्य शालिग्राम पत्थर को उठा कर ढेर सारा फल तोड़ता है, और मजे से फल खाता है, आश्रम में ही जामुन का भी पेड़ होता है, और वो जामुन भी तोड़ कर खाता है, और ठीक गुरुजी के आने से पहले वो शालिग्राम पत्थर को उसी जगह पर रख देता है, और ये सिलसिला रोज चलता है, और गुरुजी को कुछ भी पता नही चलता

है, रोज की तरह गुरु जी आश्रम से बाहर जाते हैं, और शिष्य गुरु के जाते ही फिर से शालिग्राम पत्थर उठाकर फल तोड़ता है, लेकिन इस बार शालिग्राम पत्थर भुला जाता है, और वो बहुत चिंतित हो जाता है, उसे लगने लगता है गुरुजी बहुत डांटेंगे, इसलिए वो गुरुजी के आने से पहले शालिग्राम पत्थर के जगह जामुन रख देता है, गुरुजी शाम को आश्रम आते हैं, उन्हे कुछ पता नही चलता है, सुबह गुरुजी नहा ...धोकर शालिग्राम पत्थर समझकर जामुन को जल से स्नान कराकर दूध से अभिषेक करते हैं, फिर चंदन और कुमकुम लगाते है, जैसे ही चंदन और कुमकुम जामुन पर लगाते हैं, जामुन का छिलका उजड़ जाता है, गुरु जी ये सब देखकर दंग रह जाते हैं, और बौखलाते हुए शिष्य से पूछते हैं ये कैसे हुआ? शिष्य गुरुजी की बातों को सुनकर बोलता है , पुनी...पुनी चंदन , पुनी .पुनी ..पानी , ठाकुर जी सड़ गेल.. खून हम की जानी ? आर्थत आप बार..बार शालिग्राम पत्थर पर कभी जल चढ़ाते थे,कभी दूध से अभिषेक करते थे,कुमकुम और चंदन लगाते थे, अगर आपके ठाकुर जी सड़ गए तो हम क्या जाने?

श्राद्ध पक्ष : श्रद्धा परंपरा

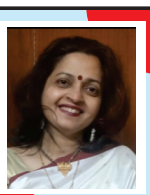

सोनिका कुलश्रेष्ठ
कुमको, शाहजहांपुर

परंपरा का अर्थ है बिना व्यवधान के श्रृंखला रूप में जारी रहना। परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में विश्वास और रीति रिवाज के हस्तांतरण को दर्शाती है। यह समाज की सामूहिक विरासत होती है जो की समस्त समाज में व्याप्त होती है। इसी प्रकार की एक परंपरा हिंदू धर्म में प्रचलित है पितृ पक्ष में अपने पूर्वजों का श्रद्धा पूर्वक पूजन और ध्यान करना।

'पितृ देवो भव:' अर्थात सनातन धर्म में पितरों को देवता समान माना गया है। पितृ यानी पूर्वज या वंशज।

हिंदू धर्म के अनुसार हम आज जो भी हैं अपने पूर्वजों की देन है। आज हम सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक उन्नति के जिस शिखर पर हैं वह पूर्वजों की ही देन है जिस प्रकार हमारा नाम हमारे शरीर, जाति ,धर्म व्यवहार की पहचान है उसी प्रकार हमारे पूर्वज हमारी पहचान है इसलिए ऋषियों ने पितृ पक्ष में हर सनातनी धर्मी को पूर्वजों का श्राद्ध ,तर्पण करने का निर्देश दिया है।

श्रद्धा परंपरा का शुभारंभ-शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध की परंपरा वैदिक काल के बाद आरंभ हुई मान्यता के अनुसार महर्षि निमी महा तपस्वी अत्री के उपदेश पर प्रथम श्राद्ध किया था समय के साथ अन्य ऋषि मुनियों ने इसे अपनाया और धीरे-धीरे चारों वर्णों के लोग श्रद्धा पूर्वक इस परंपरा का निर्वहन करने लगे।

सनातन धर्म ने पूर्वजो को याद करने के लिए 15 दिन की श्राद्ध परंपरा का निर्धारण किया है जिसे पितृ पक्ष बोला जाता है यह पित्र पक्ष भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से शुरू होता है। इस पक्ष में हम पितरों को आस्था पूर्वक पूजते हैं। पितरों की तृप्ति के लिए पिंडदान व तर्पण वस्त्र इत्यादि दान करके कर उनकी आत्मा की शांति की कामना की जाती है। श्रद्धा के जरिए पितरों तक भोजन पहुंचाया जाता है। माना जाता है कि इस पक्ष में हमारे पितृ सूक्ष्म रूप से धरती पर अवतरित होते हैं इस दौरान गाय, कौवा चींटी को भोजन देने की परंपरा प्रचलित है।

आयु: पूजां धनं विद्यां स्वर्ग मोक्ष सूखने सुखानि च।
प्रयच्क्षति तथा राज्यं पितृ: श्राद्ध तर्पिता।।

अर्थात जो लोग अपने पितरों का श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करते हैं। उनके पित्र संतुष्ट होकर उन्हें आयु, संतान, धन, स्वर्ग, राज्य, मोक्ष वह अन्य सौभाग्य प्रदान करते हैं वही जो पितरों का श्राद्ध तर्पण नहीं करते वह उनके कोप श्राप के भागी बनते हैं। पुराने के अनुसार पितृ धन नहीं भावना से प्रसन्न होते हैं। श्रद्धालु इस पक्ष के दौरान श्रद्धा भावना से ओतप्रोत होकर अपने पूर्वजों को अपने पूजन और कर्म कांडों से यह बताते हैं कि वह आज भी हमारे अपने परिवार का हिस्सा है।

नवरात्रि में माँ के नौ रुप

नवरात्रि है भक्ति और शक्ति का पर्व
जो आता है अश्विन मास के संग
मातृशक्ति की होती है इसमें आराधना
होती है भक्त की निश्छल भावना
नौ दिन के रहते हैं लोग नौ उपवास
कन्या भी पूजी जाती है इसी दौरान
नौ दिन होते हैं माँ के नौ सुंदर स्वरूप
जो देते हैं प्रत्येक दिन नौ सीख
प्रथम दिन होता है शैलपुत्री माँ का
जो सिखाती हैं हमें संघर्ष करना
द्वितीय माँ होती है ब्रम्हचारिणी
दृढ़संकल्प होता है जिन्हें प्यारा
तृतीय दिन होता है माँ चंद्रघंटा का
जो सिखाती हैं हमेशा सजग रहना
चतुर्थ दिन होता है माँ कूष्मांडा का
जो सिखाती हैं सूर्य की भांति रहना
पंचम दिन होता है स्कन्दमाता का
जिनसे सीख मिलती है करुणा रखना
छठा दिन होता है कात्यायनी माँ का
जो सिखाती हैं बाधाओं से लड़ना
सप्तम् दिन होता है कालरात्रि माँ का
जो सिखाती हैं अंधकार को दूर करना
अष्टम् दिन होता है महागौरी माँ का
जो सिखाती हैं आशावादी रहना
नवम् दिन होता है सिद्धिदात्री माँ का
जो सिखाती हैं मुकाम तक पहुँचना

स्नेह श्रीवास्तव इंदौर

सरकारी वादे और बेरोजगारी

यह बात नया नहीं है,
अन्दाज भी पुराने हैं,
परिस्थितियों में बदलाव आया है,
रंग फिर भी पुराने हैं।
वादे करते हुए आगे बढ़ने की,
बातें कहीं गई थी,
कुछ उम्मीदें और अरमान,
मन में जगने लगी थी।
उम्मीदों पर खरा नहीं उतरने का,
मंजर कुछ-कुछ दिखा।
मशक्कत परन्तु अच्छा,
सामने सबको दिखा।
आज प्रयास और प्रयोग जारी है,
सफल होने पर,
सबमें अपनत्व बढ़ाया जा रहा है,
बेरोजगारी के दामन पर,
प्रहार किया जा रहा है।
समस्यायों से ही निदान हेतु,
उपायुक्त उपायों से इसे दूर
करने की जरूरत है,
यह आज बहुत बड़ी बात ही नहीं,
इस युग में इसका खत्म होने की सोच ही,
इस प्रयास की बढ़ा दी अहमियत है।
निराशावादी नहीं हमें,
साकारात्मक परिणाम देखने का
जज्बा रखना होगा।
समस्त देशवासियों को,
इसके उत्कृष्ट परिणामों को,
सबके सामने रखना होगा।
यह एक सुखद अहसास देगा,
खूबसूरत पहचान बनाने वाली ताकत बनकर,
सबको साथ-साथ लाने का,
प्रयोग और प्रयास करना होगा।
घबराकर दूर नहीं जाना चाहिए,
उच्च आदर्शों को समेटे हुए,
आगे बढ़ने में मदद करने की,
कोशिश रहनी चाहिए।
एक दिन अवश्य ही सुखद अहसास मिलेगा,
सबमें अपनत्व और विश्वास बढ़ेगा।

डॉ अशोक, पटना

गजल

अब ये आजार देखना है।
तेरा इनकार देखना है।

देखा है जब से उसको हमने,
कहते हैं सौ बार देखना है।

सोये हैं जो लोग जिंदगी में,
उन को बेदार देखना है।

ये रोग न लगने पाये दिल को,
तुम को घर बार देखना है।

मैं हूँ बेचारा ला मुदावा,
देखो! बीमार देखना है?

नजरें उठाते ही झुका लीं,
बोले बेकार देखना है।

इशरत ये जख्म भी भरेगा,
पर कैसे यार देखना है।

इशरत 'सगीर'
शाहजहांपुर

गजल

न महफिल में कोई फिलहाल मेरा।
करेगा कौन इस्तिकबाल मेरा।

मुकर जाना ही वाजिब है तुम्हारा,
कोई जब पूछ बैठे हाल मेरा।

सरोवर भर गया जलकुंभियों से,
उलझता जा रहा है जाल मेरा।

इमोजी से फकत बहला रहा है,
कभी तो चूम आकर गाल मेरा।

कई अपनों ने इतने रंग बदले,
बड़ा रंगीन बीता साल मेरा।

हरारत जिस्म की सब मिट गई है,
मेरी माँ ने जो चूमा भाल मेरा।

मिले 'ऋतुराज' गर संगत तुम्हारी,
सँभल सकता है ये सुर-ताल मेरा।

विकास सोनी 'ऋतुराज'
शाहजहांपुर

विरह

विह्वल व्यथित दृष्टि ये मेरी,
देखे पथ को निहार,
बार बार ध्वनि सुन वाहन की,
जब दिखती परछाई,
हृदय कहे करके स्पंदन तब,
तुम ठहरो! मैं आई,
निर्जन पथ ये देख नयन भी,
आकुल फिर एक बार।।

छिपा भावनाओं को कितनी,
मौन सदा ही रहती,
बिना नीर के मीन बनी मैं,
आतप हर क्षण सहती,
अंग अंग में प्रलय समेटे,
विछिन्न सकल श्रृंगार।।

मिलने को व्याकुल सदैव ही ,
देखूँ प्रतिपल सपना,
बिना तुम्हारे है क्या कोई,
यहाँ जगत में अपना,
समक्ष मेरे आ जाओ तो,
आँसू दें पथ पखार।।

अब तुमको आना ही होगा,
विरह वेदना न सहूँ,
मिली देह ये क्षणभंगुर है,
अगले पल मैं न रहूँ,
मन भर देखूँ तुम्हें प्रिये फिर,
कर दूँ सर्वस्व वार।।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम छत्तीसगढ़

ममता की अधिकारी

मां मेरी मुझको भी खूब,
ज्यादा सा प्यार करो ना।
मां जैसे तुम भैया को करती प्यार,
वैसा ही मुझसे भी प्यार करो ना।
मां मैं भी तेरी अंश हूं मैं भी तेरी हूं छाया,
क्यों करती हो मां इतना विभेद मुझसे।
मां क्यों नहीं देती हो तुम,
मुझको भी वह आजादी।
मां तू नहीं देती वह सुख,
जिसकी मैं अधिकारी
मां भैया को तू सभी अधिकार देती,
खेलने, घूमने और पढ़ने की।
मैं वहां देखते रह जाती,
क्योंकि मैं तेरी बिटिया हूं।
मां मुझको भी पढ़ना है
निरंतर आगे बढ़ाना है।
इस दुनिया में अपना मान,
अपनी पहचान बनाना है।
मां एक तराजू के दो है पहलू
बेटा, बेटी एक समान
एक है तेरी अखियां तो,
दूजा है उसमें का प्रकाश।
मां मेरी मुझको भी,
ज्यादा सा प्यार करो ना।
जैसे तुम भैया को करती
वैसा प्यार मुझे भी करो ना

विभा कुमारी सिन्हा
जमशेदपुर झारखण्ड

कविता

आईने में चेहरा है जो वह चेहरा कोई और है
कौन किसमें कैद है कह रही कहानी और है

गुमराह होकर भटक रहे मंजिल का पता नहीं
सियासत राज करती जहां वो राजधानी और है

चार दिन का मेला है मौत आएगी यह खेला है
अपने ही हाथों अपनी पीठ थपथपानी और है

सच्चाई कुछ दिखती नहीं आँखों वाले अंधे हैं
खाते कसमें गीता की पर सचबयानी और है

झूठ-फरेब में लिपटे है लोग वह जबानी और है
दुनिया तो जानती है कैसे होती मेहरबानी और है

अपने ही जीस्त से उबने लगे हैं अब लोग यहाँ
घुट-घुटकर जीना और है और जिंदगानी और है

सपना चन्द्रा भागलपुर बिहार

व्यंगजल

जाति धर्म की अंध नीति को,
बना ले अपनी तू ढाल प्यारे!
कुर्सी पर काबिज होना तो कर ये,
फसाद, दंगे, हड़ताल, प्यारे !
'दिनेश' ने तेरा पढ़ा है सिजरा,
कभी रहा तू भी कंगाल प्यारे!

चुनाव का जब हो साल प्यारे!
दिखा दे कोई कमाल प्यारे!!
समझ सकेगी न जिसको जनता,
चल दे तू ऐसी कुचाल प्यारे !
ये मंदिर मस्जिद पुराना किस्सा,
नया शिगूफा उछाल प्यारे!
उसी से तूने किया धरोना,
कभी कहा जिसे छिनाल प्यारे!

दिनेश रस्तोगी
शाहजहांपुर

हम आप और रसोई

पिज्जा के स्वाद वाले पनीर कुरकुरे

बच्चों के पसंदीदा कुरकुरे में एक स्वस्थ ट्विस्ट। इसे घर पर बनाएं और आनंद लें। बाजार में जो कुरकुरे मिलते हैं वो महंगे तो होते ही हैं साथ में सेहत के लिए अच्छे भी नहीं होते। एक बार घर पर बना कर देखिए बाजार वाले भूल जाएँगे। शाम की चाय के मजेदार साथी बन जायेंगे। अविश्वसनीय स्वाद वाला स्वादिष्ट और कुरकुरा कुरकुरे पनीर बनाना बहुत आसान है। न केवल अविश्वसनीय रूप से स्वादिष्ट कुरकुरे पनीर बनाना आसान है, बल्कि इस स्नैक को बनाने के लिए बहुत कम सामग्री की आवश्यकता होती है। स्वादिष्ट और कुरकुरे पनीर बाहर से कुरकुरा होता है। जो स्नैक को मुंह में पानी लाने वाला बनाता है। हम स्वादिष्ट कुरकुरे पनीर की रेसिपी शेयर कर रहे हैं, इस रेसिपी को फॉलो करके आप आसानी से घर पर स्वादिष्ट स्नैक बना सकते हैं।

कुरकुरे पनीर छोटी घरेलू पार्टी या शाम की चाय के लिए स्वादिष्ट पनीर स्नैक है।

पारुल जैन
मस्कत, ओमान

विधि

पनीर को मैश कर लें और चावल का आटा मिला लें। ऊपर लिखे सारे मसाले डालकर मिला लें। घी और सॉस डालें। हल्का नरम आटा गूंथने के लिए थोड़े से पानी का प्रयोग करें। आटे की छोटी-छोटी लोइयां लें और कुरकुरे के आकार में हाथ से रोल कर लें। मध्यम से तेज आंच पर सुनहरा भूरा होने तक तलें। एयरफ्रायर में आजमाएं। वे और अधिक कुरकुरे हो जायेंगे। कुरकुरे, चटपटे, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक कुरकुरे तैयार हैं।

सामग्री.....

1 कप पनीर
1 कप चावल का आटा
1 बड़ा चम्मच घी
3/4 छोटा चम्मच नमक
1 चम्मच मिश्रित इटालियन हरब्स..
(ये आसानी से बाजार में मिल जाते हैं)
1 छोटा चम्मच चिली फ्लेक्स
1 चम्मच चाट मसाला
1 बड़ा चम्मच चिली सॉस
1 बड़ा चम्मच टमाटर सॉस
तलने के लिए तेल

नोट-

1. नमक, मिर्च आप अपने हिसाब से कम या ज्यादा कर सकते हैं।
2. आँच मध्यम ही रखें तभी अच्छे बनेंगे।
3. आटा ना ज्यादा सख्त हो ना ज्यादा नरम।

गजल

सीमित यदि अरमान रहेगा।
खुश रहना आसान रहेगा।

जिसके पाँव रहे चादर में,
सुख में वो इंसान रहेगा।

मजलूमों की हकमारी कर,
दु:ख पाता धनवान रहेगा।

तिनका साथ नहीं जाना है,
रक्खा सब सामान रहेगा।

इश्क मुहब्बत के चक्कर में,
आशिक कब हलकान रहेगा।

दुनिया एक सराय सरीखी,
इंसाँ बस मेहमान रहेगा।

'ज्ञान' हकीकत को झुठलाकर,
कब तक तू अंजान रहेगा।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

गजल

सितमगर ने जी भर रुलाया कहाँ है,
अभी तो मजा उसको आया कहाँ है।
नजर का इशारा समझ कैसे पाऊँ,
इशारों का मतलब बताया कहाँ है।
अगर इश्क है तो तगाफुल भी होगा,
सो अरमान उस ने दबाया कहाँ है।
मिरे जुज के अंदर मेरा कुछ नहीं है,
मोहब्बत में खुद को बचाया कहाँ है।
जो दिल में दबा है वो 'बेदार' कह दो,
ये नगमा बहुत दिन से गाया कहाँ है।

प्रदीप सहाय 'बेदार'
शाहजहांपुर

रानी प्रियंका वल्लरी
बहादुरगढ़ हरियाणा

मौन उत्तम तरीका है

शब्दों का स्वरूप पारलौकिक होता हैं। जो मानसिक यात्रा और व्यक्तिगत क्षमता को संदर्भित करता हैंइसलिए विचार और भावों का विस्तार अनंत हैं। आपके अंतस में जो भी विचार उपजे जरूरी नहीं जो शब्दकोश से मेल जोल खाता ही हो। क्योंकि शब्दकोशों में तो सटीक शब्दों के अर्थ होते हैं। आपके मनोभाव और विचार के अर्थ तो नहीं मिल सकते हैं। यह मन से निकले विचार आपके ख्याल पर निर्भर करता हैं। जिसका अर्थ शब्दकोशों में नहीं ढूँढ़ा जा सकता हैं। फिर एक नए शब्द का निर्माण होता हैं। आपके अंतस से निकले ख्याल ही नया अर्थ बनता हैं। ठीक वैसे जैसे एक नन्हा शिशु दुनिया में पहली बार आंखें खोलता हैं।

सामान्य व्यक्ति जीतने भी सीमित शब्द जानते समझते हैं इसका एक अंश ही बोल पाते हैं। या लिखने में प्रयोग करते हैं। या आवेश में आकर कुछ भी बोल जाते हैं। फिर उन्हें तब समझ आता हैं जब उनके बिना सोचे समझे कुछ भी बोल जाना कितना अहित होता हैं। शब्दों में विवाद वैमनस्यता भी बहुत हैं। कई बार गलत शब्दों के उपयोग से अपनों में दरार बन जाता हैं। जहां से सौहार्द विदा ले लेता हैं। कभी कभी शब्दों के शोर में हम इतने उलझ जाते हैं जो संवाद ताक पर रह जाता हैं। जब शब्द तांडव करने लगे तो मौन सबसे उत्तम तरीका हैं। जहां से बिना कहे,सुनाये सौहार्द के लिए हाथ फैलाए स्वागत करने का दरवाजा हमेशा आपके लिए खुला रहता हैं।

गजल

खबर है बीत गई है ये जिन्दगी आधी
मगर यकीन नहीं है कि रह गई आधी

वो दास्तान सुनाते हुए अचानक से
झिझक के सोच के बोला कि फिर कभी आधी

शराबे जीस्त बिना आब पीना है मुश्किल
सो आधा होश रहे और बेखुदी आधी

कहाँ वो चाँद फलक पर कभी अधूरा था
हुआ था यूँ कि हमीं पर झलक पड़ी आधी

तुम्हारी राह निहारा किया मैं सारा दिन
चले भी आओ कि गुजरी है शब अभी आधी

शिजयाश् अगर वो कहे तो जमीनो जर क्या है
हयात बाँट लूं आधी मैं साँस भी आधी

सुभाष पाठक 'जिया'
शिवपुरी म.प्र.

मैं अमर हो जाऊँगा

हृदय के अलिंदो पर
मेरे हृदय के अलिंदो पर
जब तेरे प्रेम प्ररोह का अंकुरण हुआ।
तब मेरा जीवन संगीतमय हुआ
मेरा जीवन संघर्ष भी तेरी ही याद में।
मेरे हृदय के हर संकुचन पर
मेरी वाहिकाओं मे बहती
रूधिर की हर कोशिकाओं पर
तेरे ही नामों के आलेख है।
मेरे रक्त की लाली से जब तेरा श्रृंगार होगा
तू मेरा मन मोह लेगा

हन्नान
शाहजहांपुर

जीवन और साधना

अजीत यादव
शाहजहांपुर

मनुष्य के वैशिष्ट्य में एक विशेषता यह भी है कि उसे जिस ढाँचे में ढाला जाये उसमें वह ढल सकता है। अन्य प्राणियों में यह विशेषता नहीं है। सिंह, अजगर, बाज आदि हिंसक प्राणी अहिंसक नहीं बन सकते। गाय, हिरन, कबूतर, तितली आदि प्राणी अपनी अहिंसक प्रकृति को नहीं बदल सकते। अन्य सभी जीव जन्तु अपनी एक निश्चित प्रकृति लेकर आते हैं और साधारणत: उसी स्थिति में जीवनयापन करते हैं। किन्तु मनुष्य पर यह बात लागू नहीं होती। वातावरण परिस्थिति और प्रयत्न से उसकी प्रकृति बनती है और बिगड़ती है। एक मनुष्य से दूसरा मनुष्य शारीरिक दृष्टि से सूरत शक्ल से तो बहुत कुछ मिलता जुलता है पर प्रकृति, योग्यता, क्षमता, गुण, स्वभाव, दृष्टिकोण आदि मानसिक परिस्थितियों में अन्तर देखा जाता है। एक उन्नति के शिखर पर तेजी से चढ़ता चला जा रहा है तो दूसरा पतन के गर्त में द्रुत गति से गिर रहा है। एक व्यक्ति ने पुरुषार्थ का मार्ग अपनाकर अपनी शक्तियों को विकसित करके आश्चर्यजनक प्रगति की है तो दूसरा आलस्य और प्रमाद में पड़ा हुआ दीन-हीन बन रहा है।

प्रगति और पतन के अनेक क्षेत्र हैं। मनुष्य परिस्थितियों के साथ घुल-मिलकर उनमें से किसी भी ओर अग्रसर होता है। जिस दिशा में कदम बढ़े थे उसी के अनुरूप बनता और ढलता चला जाता है। प्रयत्नों के द्वारा मनुष्य को ढाला जा सकताहै। इस ढलने और ढालने की क्रिया को साधना कहते हैं। व्यक्ति के निर्माण की विद्या को साधना कहा जाता है,

इस समूची प्रक्रिया को ही संस्कृति भी कहते हैं। ऐसा मनुष्य भी एक पशु है, उसमें भी सब पाशविक दुर्गुण मौजूद हैं पर साधना द्वारा उसमें उपयुक्त संस्कार डाले जाते हैं। तभी वह संस्कृत एवं सभ्य कहलाने का अधिकारी बनता है। इसी प्रयत्न का पथ प्रशस्त करने में से उसकी प्रसुप्त स्थिति में पड़ी हुई महान शक्तियां विकसित हो जाती हैं।

जैसे तैसे जीवित रहने और दिन काटने की स्थिति तो साधारण रीति से भी प्राप्त हो जाती है पर यदि किसी दिशा में प्रगति करनी हो तो प्रयत्न पूर्वक साधना का मार्ग अपनाना पड़ता है। ढालने और ढलने की प्रक्रिया को अपनाना पड़ता। शारीरिक दृष्टि से उन्नति करने के इच्छुक व्यायाम की साधना करते हैं और स्थिर चित्त एवं उत्साह के साथ दीर्घ काल तक उसी ओर लगे रहे

तो एक दिन अच्छे खिलाड़ी अच्छे पहलवान, अच्छे नट और सुन्दर सुडौल निरोग दीर्घायु बनने में सफल होते हैं। शिक्षा की दृष्टि से उन्नति करने के इच्छुक लोग शिक्षालयों में प्रविष्ट होते हैं, शिक्षकों का मार्गदर्शन ध्यान पूर्वक ग्रहण करते हैं, पाठ्यक्रम को हृदयंगम करने के लिए दिन-रात पढ़ते हैं, इस प्रकार प्रयत्न करते-करते वे एक दिन विद्वान बन जाते हैं। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने वाले व्यापार आदि के साधन जुटाते हैं, उनकी बारीकियों को समझने के लिए आवश्यक शिक्षण प्राप्त करते हैं, ग्राहकों को आकर्षित करने की व्यवस्था सीखते हैं। भारी दौड़-धूप करते हैं, प्रतिस्पर्धा में टिके रहने की कुशलता बरतते हैं, अपव्यय को रोकते हैं तब कहीं इस अर्थ साधना से धनवान बनने की सिद्धि प्राप्त करते हैं। इन्जीनियर, डॉक्टर, शिल्पी, मेकेनिक, वैज्ञानिक संगीतज्ञ, गायक, नर्तक, कलाकार, कवि, लेखक आदि की विशेषताएँ लो अनायास ही किसी को प्राप्त नहीं हो जातीं वरन इसके लिए चिरकाल तक, निरन्तर प्रयत्न करते रहना पड़ता है, तब कहीं यह सफलताएँ उपलब्ध होती हैं। यदि यह प्रयत्न एवं साधन न जुटे तो इन विशेषताओं को प्राप्त कर सकना भला किसी के लिये कैसे सम्भव हो सकता है।

जिस प्रकार मनुष्यों में शारीरिक दृष्टि से साधारण-सा ही अन्तर होता है, इसी प्रकार मानसिक दृष्टि से भी थोड़ा-सा ही अन्तर है। यदि हम किसी को पतनोन्मुख देखते हैं तो इसका कारण उसकी साधना एवं साधन ही हैं। व्यक्ति गीली मिट्टी के समान है निश्चय ही वह साधनों के आधार पर, साधनाओं के आधार पर ढाला जाता है, ढलता है। उपर्युक्त भौतिक क्षेत्रों में जिस प्रकार साधना एवं साधनों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार गुण, स्वभाव, आदत, चरित्र, आचरण, आदर्श, विश्वास, भावना, दृष्टिकोण आदि मानसिक विशेषताओं के निर्माण में भी साधना एवं साधन ही प्रधान कारण हैं। यदि उनकी ओर उपेक्षा रखी जाये तो असंस्कृत स्थिति ही बनी रहेगी। जिनकी मनोभूमि का सावधानीपूर्वक निर्माण नहीं हुआ है, वे अपने प्रयत्नों से किसी भौतिक सफलताओं में सफल भले ही हो गये हों, आन्तरिक दृष्टि से हीन दशा में ही पड़े रहेंगे और हीनता उन्हें कभी भी महान पुरुष की, सभ्य नागरिक की, श्रेष्ठ मानव की स्थिति में न पहुँचने देगी। यह अभाव मानव जीवन का सबसे बड़ा अभाव है। साधना से ही जीवन ऊर्जा सही प्रयोग कर जीवन लक्ष्यों को सिद्ध किया जा सकता है।

धोखा : 'जब अपने करे दगा, ना कोई सगा'

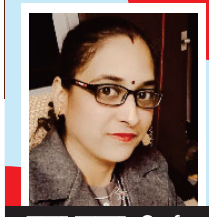

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

हमारे भारतवर्ष में कई अनेक धर्म के लोग रहते हैं वे धर्म के साथ अलग-अलग परिवारों में बँट गये है। बचपन से ही परिवार के लोग अपने बच्चों में संस्कार डालते हैं अच्छे बुरे का। उन्हें यह सिखाते हैं यह परिवार की मदद कैसे करनी चाहिए और आसपास रहने वालों की मदद कैसे करनी चाहिए? इतना सब कुछ होने के बावजूद भी परिवार के लोग केवल बच्चों को सलाह मशवरा देकर उन्हें सिखाने का प्रयास तो करते हैं लेकिन खुद को समझाने का प्रयास कभी नहीं करते। दूसरों को ज्ञान देना उचित समझते हैं पर खुद ज्ञान लेना उचित नहीं समझते! बड़े बुजुर्गों की आज्ञा मानना, उनके चरण छूना, माता पिता के सुख दुख का साथी बनना। यह सारी बातें आजकल दिखावे के लिए रह गई है लोग एक दूसरे की मदद करने के बजाय एक-दूसरे के गिरेबान में झाँकने लगे हैं, एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहना आजकल समाज में यह असामाजिक जड़े व्याप्त होती जा रही हैं। अब कोई किसी का सम्मान नहीं करना चाहता है प्यार और दिखावे का ढोंग रचा कर एक दूसरे से अपना काम निकलवा लेना आज कल समाज के हर सदस्यों का कार्य हो गया है। शादी विवाह हो या किसी बच्चे का मुंडन संस्कार हो, किसी के जन्मदिन की पार्टी हो! सब में लोग बड़ी आसानी से पहुँच जाते हैं और प्यार और दिखावटीपन का ढोंग रचते हैं एक दूसरे की तारीफ करते हैं और फिर अगले ही पल एक दूसरे की बुराई करना शुरू कर देते हैं। आजकल रिश्तेदार स्वार्थवश एक दूसरे से जुड़ना चाहते है व्यवहार के नाम पर लोग एक दूसरे को छलते हैं। पहले लोग चिट्ठी के जरिए और घर जाकर लोगों को विवाह का निमंत्रण दिया करते थे और कार्ड में चुलिया निमंत्रण लिखकर बुलाया जाता था, आजकल तो फोन की सुविधा होने पर भी लोग एक दूसरे से बात करना उचित नहीं समझते हैं और ना ही तरीके से निमंत्रण देते हैं। शादी का कार्ड तो ऐसे पोस्ट कर दिया जाता है जैसे कि कोई बोझ उनके सर से उतर गया हो। लोग किसी के दरवाजे जाए तो कैसे जाए? जब व्यवहार ही ऐसा रखा जाता हो।

आजकल हर जगह सिर्फ धोखा ही धोखा दिखाई देता है कोई प्यार के नाम पर धोखा कर रहा है, कोई दोस्ती के नाम पर धोखा दे रहा है, तो कई पति पत्नियाँ एक दूसरे को धोखा देते नजर आते हैं। पारिवारिक रिश्तो में प्रेम और पक्का विश्वास नहीं रह गया है हर जगह अपनी वाहीवाही लूटने के लिए लोग एक दूसरे का

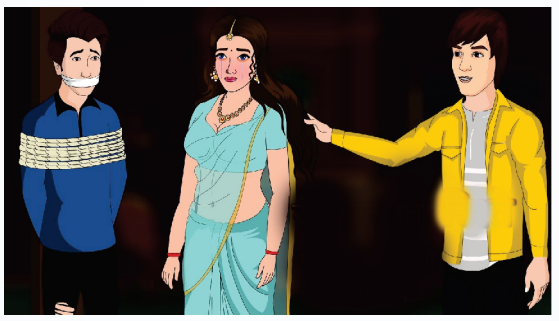

गला काटने पर उतारू हो जाते हैं। अब तो सम्मान पत्र भी सोशल मीडिया पर पैसे लेकर दिए जाते हैं और, निशुल्क संस्थायें बहुत कम ही होती हैं जिन्हें अपने सच्चे कार्य के लिए प्रमाण पत्र दिए गए हो। कई रचनाकार तो ऐसे भी होते हैं जो किसी की भी रचना को चुरा कर अपने नाम से प्रेषित कर उनके साथ धोखा करते हैं। झूठा दिखावा करके मान सम्मान प्राप्त करना यह धोखा नहीं है तो क्या है? एक समय था जब समाचार पत्र पढ़ने के लिए लोग सबेरे से अपने घर के द्वारे बैठकर किसी भी टॉपिक पर चर्चा किया करते थे, लेकिन आज सोशल मीडिया में समाचार पत्र आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं और सबसे सोचनीय बात यह है कि लोग केवल अपनी प्रकाशित रचनाओं को पढ़ने में रुचि रखते हैं, दूसरे की रचनाओं को पढ़ने का उनके पास समय नहीं होता है, केवल हेडलाइंस को देख कर लाइक कमेंट करने की होड़ मची रहती है, लेकिन लिखे हुए भाव को समझना उनके बस का नहीं होता है! दुनियाँ धोखेबाजी से भरी पड़ी है यहाँ कोई भी सच्चा व्यक्ति मिलना मुश्किल है जिस पर पूर्ण रुप से विश्वास किया जा सके! जो सच्चे कलाकारों की इज्जत करते हो ऐसे संपादक भी होने चाहिए जो लेख और कविताओं को अपने अखबारों में स्थान देते हैं नि:स्वार्थ भाव से बस उन्हीं समाचार पत्रों में अपने लेख या कवितायें देनी चाहिए, यदि कोई बदतमीजी करें तो वहाँ से हट जाना ही उचित होता है। मीठी मीठी बातों से पटा कर अपने काम को निकलवाने वाले लोग सोशल मीडिया में भरे पड़े हैं। कोशिश करें कि ऐसे लोगों से हम दूर रहे जो लोग दिखावा करते हैं। जो दूसरों के हक का खाते हैं ऐसे लोग जीवन में कभी सुखी नहीं रहते हैं अपने घर की महिलाओं को छोड़कर सोशल मीडिया में रहने वाली महिलाओं के साथ गलत मित्रता करने वाले लोग अपनी पत्नी के साथ धोखा करके कभी सुखी नहीं रह सकते हैं और ना ही ऐसी औरतें जो अपने पतियों को धोखा देती हैं।

काश! फिर से एक ऐसा समाज बन जाए जहाँ लोग एक दूसरे के दुख में शामिल हो और किसी स्वार्थवश किसी से ना जुड़े हो! एक दूसरे की बुराई से बेहतर एक दूसरे को गले लगाना उचित समझते हो। व्यापारियों, साहूकारों, नेता जनता, और घर में पति पत्नी के बीच किसी प्रकार की कोई धोखेबाजी ना हो। आम जनता लुटने की कगार पर ना आये और ना ही परिवार के लोग एक दूसरे से अलग रहे। ना सपनों का जहाँ रहा, ना अपनों की इज्जत! सब बेच कर खा गये, अंदर ही अंदर समाज के भक्षक!

धरोहर

अंग्रेजों की लाशों से पट गया था जीएफ कॉलेज के सामने वाला चर्च

सुशील दीक्षित 'विचित्र'
शाहजहांपुर

जी एफ कालेज के सामने सड़क के किनारे दक्षिण दिशा की और मुंह किये 60 फिट ऊँची जो इमारत खड़ी है उसकी उम्र 170 साल है और वह शहर का पहला चर्च है। इस कैथोलिक चर्च ने 1857 की क्रांति को देखा था। 1813 - 14 में अंग्रेजों ने शाहजहांपुर को जिला बनाया। शहर के उत्तर में छावनी पड़ी और अंग्रेजी फौजें बड़े बड़े मैदानों में परेड करती दिखाई पड़ने लगीं। इसके काफी समय तक किसी चर्च का निर्माण नहीं किया गया। इसका कारण अंग्रेजों की व्यस्तता भी कह सकते हैं। तब वे लार्ड डलहौजी के नेतृत्व में देशी रियासतों को हड़पने और लूटने खसोटने में लगे थे। जब अंग्रेजों ने लगभग पूरे देश पर कब्जा कर लिया तब उनका ध्यान अपनी जरूरतों की ओर गया। 1854 में डूंडे खां के विशाल बाग के सामने एक चर्च का निर्माण कराया गया। इसमें मुख्य हाल में बीस में गैलरी देते हुए इधर उधर कई बेंचें डाली गयीं, इन बेंचों में थोड़ी थोड़ी दूर पर ऊपर की ओर छेद बनाये गए ताकि सैनिक उन छेदों से नली निकाल कर बंदूकें टिका सकें। चर्च का संचालन इंग्लैण्ड के चर्च द्वारा किया जाता था, 31 मई 1857 को जब प्रथम क्रान्ति का आगाज हुआ तो शाहजहांपुर में भी सैनिकों ने विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया। क्षेत्र में कई अंग्रेज अफसर मारे गए, इस दिन रविवार था, इसके कारण बहुत से सैनिक अफसर चर्च में साप्ताहिक प्रार्थना के लिए एकत्र हुए। लगभग दो दर्जन विद्रोही सैनिकों का रेला चर्च के अंदर पैबस्त हो गया, वहां भगदड़ मच गयी, औरतों बच्चों और कुछ पुरुषों ने भाग कर पास के कमरे में घुस कर अपने को बंद कर लिया। बाहर देखते ही देखते आधा दर्जन से अधिक अफसर और अन्य अंग्रेज लाश बना कर गिरा दिए गए। चर्च का फर्श खून से लाल हो गया, प्रथम क्रान्ति में शाहजहांपुर साल भर भी आजाद नहीं रह पाया। एक साल के अंदर ही अंग्रेजों ने फिर शाहजहांपुर पर अधिकार कर लिया। इस कत्लेआम के बाद क्रांतिकारियो ने कैंट क्षेत्र में आग लगा दी और घर लूट लिए। सरकारी खजाना लूट लिया। इसके बाद क्रांतिकारियों ने शहर को आजाद घोषित करते हुए विजय जुलूस निकाला। इस हमले में जवाहर राय, नारायण पांडेय, रामाधीन सिंह, रामनारायण दुबे, शिवचरन, ननकू, गंगा दुबे, महादेव आदि शामिल थे। लेकिन इसके बाद भी घटना के तीन वर्ष तक चर्च उजाड़ वीरान पड़ा रहा। फर्श परपड़ा खून

सूख गया और धूल से पट गया। 1860 में विशप कॉटन के प्रयासों से फर्श दीवारे आदि साफकर इसका पुनरोद्धार कराया। तीन वर्ष बाद इसमें फिर से रविवार को साप्ताहिक प्रार्थना होने लगी जो 163 वर्ष बाद आज भी जारी है। मैं रविवार को ही प्रार्थना के बाद पादरी से मिला था, तब मैं बैंचों पर छेद तो देखे ही, उत्तरी दीवार पर कई नामों की कई पट्टियां भी लगी देखीं, पादरी ने बताया कि यह उन लोगों के नाम हैं जो विद्रोही सैनिकों के क्रोध का शिकार हो कर मारे गए थे। उन्होंने पीछे बनीं कुछ समाधियां भी दिखाई जो मारे गए अंग्रेज अफसरों की थीं। 1978 में बानी श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित और शशी कपूर द्वारा अभिनीत फिल्म जूनून में इस चर्च में घटे 1857 के घटनाक्रम को दर्शाया गया था। इसकी शूटिंग चर्च में ही हुयी थी।

हमास का इजराइल पर वार-भारत अमेरिका आतंकवाद के खिलाफ तैयार

किशन भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर तेजी से बदलते घटनाक्रम में जहां रूस -यूक्रेन युद्ध की समस्या अभी टली नहीं है, बल्कि बढ़ती जा रही है वहीं हमास फिलिसतीन द्वारा इजराइल पर पांच छह हजार से अधिक मिसाइल से हमला कर पूरी दुनियां का ध्यान आकर्षित कर दिया है। वहीं इसराइल ने भी आधिकारिक तौर पर युद्ध की घोषणा कर दी है। हालांकि फिलिस्तीनियों और इजरायल यहूदियों का यह मुद्दा बहुत पुराना है, जब अखंड भूमि पर ब्रिटिश राज था उस समय यहूदियों द्वारा अलग क्षेत्र की मांग की गई थी यहीं से यह विवाद प्रारंभ हुआ था। जग जाहिर है कि अमेरिका और भारत सबसे अधिक आतंकवाद के पीड़ित देश हैं। कुछ वर्षों से दोनों की अति नजदीकियां हुई है, अनेक रणनीतिक साझेदारियां भी हुई है और कनाडा भारत विवाद के बावजूद अमेरिका द्वारा अमेरिकी रक्षा मंत्रालय (पेंटागन) ने कहा था कि भारत-अमेरिका मजबूत रक्षा साझेदारी बनाए रखने का प्रयास जारी रखेंगे। अमेरिका के खास प्रिय इसराइल पर हमास के हमले की जानकारी तेजी से सारी दुनियां में फैली जिसपर अमेरिका का तुरंत रिएक्शन आया और बिडेन ने इसराइल का साथ देने की जानकारी दी। वहीं भारत नें भी आतंकवाद के खिलाफ इजराइल का साथ देने का ऐलान व समर्थन किया, चूंकि आतंकवाद के खिलाफभारत अमेरिका हमेशा से ही साथ-साथ हैं। अंतरराष्ट्रीय नियम आधारित व्यवस्था और देश की संप्रभुता के संरक्षण में भारत अमेरिका की साझेदारी सराहनीय है।

हम हमास इजरायल युद्ध की बात करें तो, हमास के लड़ाकों द्वारा एक आश्चर्यजनक हमले में गाजा की सीमा का उल्लंघन करने के एक दिन बाद इस्राइल और हमास के बीच लड़ाई तेज हो गई है। हमास के रॉकेट हमलों और जमीनी हमले में मरने वालों की संख्या 800 से अधिक हो गई, जबकि 2000 अन्य लोगों के घायल होने की सूचना है। पेपर ऑफइस्राइल ने अधिकारियों के हवाले से बताया कि गाजा में कई इस्राइलियों को बंधक बना लिया गया था। वहीं एक रिपोर्ट के मुताबिक, ऑपरेशन का पहला चरण हमारे क्षेत्र में घुसने वाली कई दुश्मन ताकतों के खात्मे के साथ समाप्त हो गया था। इस्राइल के पीए ने हमास को कड़ी चेतावनी जारी करते हुए दावा किया कि उसने एक खतरनाक युद्ध शुरू किया है। इस्राइल रक्षा बल (आईडीएफ) उनकी क्षमता को कमजोर करने के लिए अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करेगा।

इस मामले में भारत के रुख की करें तो, इजरायल में हुए हमास आतंकियों के हमले को लेकर तमाम देशों ने इसकी आलोचना की है। वहीं भारत के पीएम नरेन्द्र मोदी ने भी इजरायल को समर्थन दिया। उन्होंने कहा इजरायल में आतंकवादी हमलों की खबर से गहरा धक्का लगा है। इस हमले में मारे लोगों और निर्दोष पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हमारी संवेदनाएं हैं। हम इस कठिन समय में इजरायल के साथ एकजुटता से खड़े है। इस्राइल पर हमास आतंकवादियों द्वारा किए गए हमलों के बीच भारत ने इस्राइल को समर्थन देने की बात कही है। भारत में मौजूद इस्राइल के राजदूत ने कहा कि भारत दुनिया में एक खास महत्व रखता है। भारत का इस्राइल को समर्थन आतंकवाद की गहरी समझ पर आधारित है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि भारत आतंकवाद को जानता है। ऐसे समर्थन से मैं बहुत उत्साहित हूं। साथ ही युद्ध स्थिति पर जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि

हमलों में इस्राइली और गैर-इस्राइली दोनों नागरिकों की जान गई है। जल्द ही उनका विवरण दुनिया के साथ साझा किया जाएगा।

बात अगर हम इस मामले पर अमेरिकी रूख की करें तो, अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजरायल को अपना समर्थन जताते हुए कहा, मैं इजरायल, पूरी दुनिया और कहीं भी बैठे आतंकियों से कहना चाहता हूं कि अमेरिका इजरायल के साथ खड़ा है। हम उनके साथ खड़े होने में कभी भी असफल नहीं होंगे। हम ये निश्चित करेंगे कि इजरायल के लोगों को जो भी मदद चाहिए वो हम उन्हें दें। वो अपना बचाव करना जारी रख सकते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, दुनिया भयावह तस्वीरें देख रही है। इजरायली शहरों पर हजारों रॉकेट बरस रहे हैं। हमास के आतंकवादी न केवल इजरायली सैनिकों बल्कि नागरिकों को सड़कों और उनके घरों में मार रहे हैं। यह अनुचित है। इजरायल को अपनी रक्षा करने का अधिकार है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा, मुझे यह बात यथासंभव साफतौर पर कहना है कि यह किसी भी पार्टी के लिए इजरायल के खिलाफहुए इन हमलों का फायदा उठाने का समय नहीं है। इजरायल और फिलिस्तीन एक बार फिर से आमने-सामने हैं। हमास के आतंकियों ने इजरायल के ऊपर अचानक से हमला कर दिया। तमाम देश में हमास के इस कायरपूर्ण हमले की कड़ी आलोचना की जा रही है। भारत ने अपने दोस्त मुल्क इजरायल का समर्थन किया है तो वहीं अमेरिका भी इजरायल के साथ खड़ा है।

पेंटागन के प्रेस सचिव ने संवाददाताओं से कहा, हम रक्षा स्तर पर भारत के साथ संबंधों की काफी सराहना करते हैं। अमेरिका भारत के साथ मजबूत रक्षा साझेदारी बनाए रखने का प्रयास जारी रखेगा और मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे आप आगे बढ़ता देखेंगे। उन्होंने कहा कि अमेरिकी रक्षा मंत्रालय के लिए चीन लगातार चुनौती बना हुआ है। जब किसी देश की संप्रभुता के संरक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय नियम आधारित व्यवस्था की बात आती है तो हम भारत तथा हिंद प्रशांत क्षेत्र के अन्य देशों के साथ अमेरिका की साझेदारी की सराहना करते हैं। इन्ही व्यवस्थाओं के कारण ही कई वर्षों से शांति-स्थिरता बनी हुई है। अमेरिका भारत के साथ मजबूत रक्षा साझेदारी बनाए रखने का प्रयास जारी रखेगा। अमेरिका से यह बयान ऐसे वक्त में आया है जबकि कनाडा से भारत के संबंधों में आई खटास के बीच अमेरिका ने इसे गंभीर बताते हुए भारत से जांच में सहयोग देने की मांग की है। अमेरिकी प्रांत जॉर्जिया से डेमोक्रेट सांसद ने भारतअमेरिका के बीच रिश्ते और मजबूत बनाने के लिए काम करने का संकल्प लिया है। उन्होंने नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन अमेरिकन' द्वारा भारत अमेरिकी मित्रता का जश्न मनाने के लिए आयोजितकार्यक्रम में कहा, मैं दोनों देशों के आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों, अनुसंधान सहयोग और सुरक्षा समन्वय बढ़ाने के लिए काम करना जारी रखूंगा। उन्होंने कहा, जॉर्जिया में भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए ये संबंध काफी अहम हैं। भारत और अमेरिका के बीच 1997 में रक्षा व्यापार लगभग नगण्य था लेकिन आज यह 20 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि चीन रक्षा मंत्रालय के लिए लगातार चुनौती बना हुआ है।

ओम सिंह क्षत्रिय महासभा के जिला प्रभारी बने

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की एक बैठक जिला कार्यालय पर सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से जिला प्रभारी पद पर अधिवक्ता ओम सिंह को मनोनीत किया गया। इस मौके पर नव नियुक्त जिला प्रभारी ओम सिंह ने कहा की 25 अक्टूबर को टाउन हॉल स्थित गांधी भवन में विजयदशमी के अवसर पर आयोजित विशाल क्षत्रिय महासम्मेलन को सफल एवं यादगार बनाया जायेगा। उन्होंने सभी क्षत्रिय बंधुओ से अधिक से अधिक संख्या में आने की अपील की। इस मौके पर जिला अध्यक्ष पदम सिंह एवं जिला महामंत्री कुंवर मुनीश सिंह परिहार ने कहा की नव मनोनीत जिला प्रभारी ओम सिंह से जिला संगठन को बहुत ही अपेक्षाएं हैं। इस मौके पर रामवीर सिंह सोमवंशी, ओमकार सिंह, सुमित सिंह भदौरिया, अमित प्रताप सिंह, उदित प्रताप सिंह, धीरेंद्र सिंह सोमवंशी, निलय सिंह, पकज सिंह, विजय प्रताप सिंह, प्रदीप सिंह, रामकुमार सिंह चौहान, प्रीतम सिंह पुजारी, मोहित सिंह आदि उपस्थित रहे!

श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के कुलदीप 'दीपक' अध्यक्ष शिवकुमार महामंत्री बने

■ श्रमजीवी पत्रकार यूनियन का हुआ पुर्नगठन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के पुर्नगठन में कुलदीप दीपक को अध्यक्ष और शिवकुमार को महामंत्री बनाया गया। इस अवसर पर दोनों पदाधिकारियों ने कहा कि उनका मकसद पत्रकारों को सही दिशा में ले जाकर पत्रकारिता के शील की रक्षा करना है। खिरनीबाग स्थित सिटी प्वाइंट रेस्टोरेंट में हुई बैठक में यूनियन की जिला इकाई पुर्नगठित की गयी इसमें अध्यक्ष और महामंत्री के अलावा सुयश सिन्हा वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अभिषेक गुप्ता कोषाध्यक्ष, राजीव रंजन मीडिया प्रभारी और अरुण दीक्षित विधि सलाहकार, मनोज कुमार उपाध्यक्ष और शुभम श्रीवास्तव सचिव बनायें गये। अमित सक्सेना को नगर कमेटी का संयोजक, अशोक द्विवेदी को जलालाबाद का संयोजक बनाये गये। अनूप कुमार को नगर का मीडिया प्रभारी बनाया गया। आशीष शुक्ला, सिमरनजीत सिंह, प्रभाकर मिश्रा कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किये गये। वरिष्ठ पत्रकार सुनील अग्निहोत्री, इम्तियाज अली खां, प्रेम शंकर गंगवार, हेमंत डे, संजीब गुप्ता और सलीम खां को संरक्षक बनाया गया। जरीफमलिक आनन्द के संचालन में हुए कार्यक्रम में पदाधिकारियों और संरक्षकों ने नवनियुक्त टीम को फूल मालायें पहनाकर उनका स्वागत किया।

इस मौके पर ज्ञानेन्द्र मोहन ज्ञान, सरदार शर्मा, राहुल कुमार, विमल गुप्ता, प्रमोद पाण्डेय, मुनीश कुमार आर्य, महमूद खान, प्रदीप तिवारी, अतुल श्रीवास्तव, ध्रुव सक्सेना, ताराचन्द्र आदि मौजूद रहे। अन्त में यूनियन के मंडल समन्वयक अमित गुप्ता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

डीएम और सीडीओ ने अमृत कलश में संग्रहित की मिट्टी

लोक पहल

शाहजहांपुर। नेहरू युवा केंद्र एवं युवा कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत नायक जादुनाथ सिंह स्पोर्ट्स स्टेडियम में जिला खेल प्रोत्साहन एवं विकास समिति व तीरंदाजी संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह, सीडीओ एसबी सिंह, डीडीओ, जिला क्रीड़ा अधिकारी, जिला युवा कल्याण अधिकारी, क्षेत्रीय प्रबंधक बैंक ऑफबड़ौदा ने भी मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम अंर्तगत अमृत कलश में मिट्टी संग्रहित कर सभी से अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने का आव्हान किया। स्टेडियम में उपस्थित सभी अधिकारियों, खिलाड़ियों व अन्य स्थानीय लोगों द्वारा भी अमृत कलश में मिट्टी संग्रहित की गई।

बालिका दिवस पर बालिकाओं को दिया सशक्तिकरण का संदेश

लोक पहल

शाहजहांपुर। अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर जिले में महिला कल्याण विभाग की ओर से विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अपर जिला जज-सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पीयूष तिवारी ने कहा कि बालिकाओं के लिए शिक्षा अति महत्वपूर्ण है शिक्षा के माध्यम से ही बालिकाओं का सशक्तिकरण संभव है अत: बालिकाओं को मन लगाकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा ने जनपद में महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस मौके पर वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रबंधक नमिता यादव, प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने भी सम्बोधित किया। इस दौरान अफज़ल एवं पीएनबी रितु तथा स्कूल के शिक्षक एवं बालिकाएं उपस्थित रहीं।

जिला बाल संरक्षण इकाई की ओर से नूर उल हुदा मदरसा में आयोजित कार्यक्रम में अधिवक्ता गुलिस्ता खान, काउंसलर प्रतिभा मिश्रा, संरक्षण अधिकारी निकेत कुमार सिंह ने बालिकाओं उपयोगी जानकारियां दी। नूर उल हुदा मदरसा के संचालक इकबाल मियां ने सभी का आभार व्यक्त किया। तिलहर के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिला समन्वय कीर्ति मिश्रा, वार्डन प्रभारी शिवा कुशवाहा व स्टाफआदि मौजूद रहे।

आर्य महिला में बालिका जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

शाहजहांपुर (लोक पहल)। अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत आर्य महिला डिग्री कॉलेज में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रबंधक नमिता यादव, प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने बालिकाओं के लिए संचालित समस्त योजनाओं के विषय में जानकारी दी। जिला समन्वयक कीर्ति मिश्रा ने टोल फ्री नंबर 108 ,112, 181, 1098, 1076 1090 आदि के विषय में बालिकाओं को विस्तार पूर्वक बताया। कार्यक्रम में प्रभारी एनएसएस रानू दुबे, अध्यापिका रितु शर्मा, स्टाफ छात्राएं आदि मौजूद रहे।

आजाद भारत की उड़ान में विजेता बनी विजय लक्ष्मी विभा

लोक पहल

इंदौर (मप्र)। हिंदीभाषा डॉट कॉम परिवार की ओर से 'आजाद भारत की उड़ान' विषय पर आयोजित 71वीं स्पर्धा में विजयलक्ष्मी विभा प्रथम स्थान पर रहीं, दूसरे स्थान पर डा. कुमारी कुंदन रही।

मंच-परिवार की सहसम्पादक अर्चना जैन और संस्थापक-सम्पादक अजय जैन 'विकल्प' ने बताया कि विषय पर प्राप्त प्रविष्टियों में से श्रेष्ठता अनुरुप निर्णायक मंडल ने पद्य में पहले क्रम पर 'आजादी का परचम' रचना के लिए विजयलक्ष्मी विभा (प्रयागराज, उप्र) को विजेता घोषित किया है तो 'देख रहा है जग सारा उड़ान' पर डॉ. कुमारी कुंदन (पटना, बिहार) ने दूसरा स्थान हासिल किया है।

मंच की संयोजक प्रो. डॉ. सोनाली सिंह, मार्गदर्शक डॉ.एम.एल. गुप्ता 'आदित्य', संरक्षक डॉ. अशोक जी (बिहार), परामर्शदाता डॉ. पुनीत द्विवेदी (मप्र), विशिष्ट सहयोगी एच.एस. चाहिल व प्रचार प्रमुख ममता तिवारी 'ममता' ने सभी विजेता व सहभागियों को बधाई दी। श्रीमती जैन ने बताया कि पद्य वर्ग में तीसरा स्थान 'ध्वज का गुणगान करें' के लिए बोधन राम निषाद राज 'विनायक' (कबीरधाम, छग) को मिला है।

विमल गुप्ता अध्यक्ष व विकास गुप्ता महामंत्री बने

अखिल भारतीय दृढ़ोमर वैश्य समाज की खुदागंज इकाई का गठन

विकास गुप्ता
महामंत्री

विमल गुप्ता
अध्यक्ष

पवनेश गुप्ता
कोषाध्यक्ष

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय दृढ़ोमर वैश्य समाज खुदागंज इकाई का 223-26 का गठन किया गया हैं। यहां आयोजित एक बैठक में अखिल भारतीय दृढ़ोमर वैश्य समाज के संरक्षक राधेलाल गुप्ता, ह्रदेश गुप्ता, कृष्ण वल्लभ गुप्ता को बनाया गया। वहीं विनाद कुमार गुप्ता, अरविंद गुप्ता, सुधीर गुप्ता, सुनील कुमार गुप्ता, विनोद कुमार गुप्ता, राजू गुप्ता को मार्गदर्षक मण्डल में रखा गया है जबकि विमल गुप्ता को अध्यक्ष तथा विकास गुप्ता को महामंत्री बनाया गया है। कोषाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी पवनेष गुप्ता को दी गई है। संगठन में प्रमोद कुमार गुप्ता, राजीव गुप्ता, पंकज गुप्ता को उपाध्यक्ष, सुशील गुप्ता, योगेश गुप्ता, बालकृष्ण गुप्ता, ज्योति प्रसाद गुप्ता, सुशील गुप्ता, मुकेश गुप्ता, समीर गुप्ता, शेखर गुप्ता, शिखिल गुप्ता, आशीष गुप्ता को मंत्री तथा अभिषेक गुप्ता, शुभम गुप्ता, अंकित गुप्ता, प्रतीक गुप्ता को प्रचार मंत्री तथा अरूण कुमार गुप्ता, मनोज गुप्ता, अर्जित गुप्ता, टिंकू गुप्ता, संजीव गुप्ता, रुचिर गुप्ता को कार्यकारणी सदस्य बनाया गया है। गठन पर प्रदेश अध्यक्ष (आंचलिक) डॉ राम प्रकाश गुप्ता, मीडिया प्रभारी राकेश कुमार गुप्त, रवि प्रकाश गुप्ता, प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव कुमार गुप्ता पत्रकार, गोविन्द कृष्ण गुप्ता, भगवत गुप्ता सुनील कुमार गुप्ता आदि ने नई कार्यकारिणी को बधाई दी है।

नवरात्रि पर विशेष

हिन्दू धर्म में शारदीय नवरात्रि का है विशेष महत्व

हिंदू धर्म में शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्व है। मां दुर्गा की उपासना का पर्व साल में चार बार आता है, जिसमें दो गुप्त नवरात्रि और दो चैत्र व शारदीय नवरात्रि होती ह। शारदीय नवरात्रि अश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होती है।

अश्विन माह में पड़ने वाली शारदीय नवरात्रि का पर्व काफी धूमधाम से मनाया जाता है। इसमें मां दुर्गा की प्रतिमाएं विराजित की जाती है। साथ ही कई स्थानों पर गरबा और रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है।

इस साल नवरात्रि रविवार 15 अक्टूबर 2023, से शुरू हो रही है, 23 अक्टूबर 2023 मंगलवार को नवरात्रि समाप्त होगी वहीं, 24 अक्टूबर, विजयादशमी या दशहरा का पर्व मनाया जाएगा. आश्विन माह की प्रतिपदा तिथि 14 अक्टूबर 2023 की रात 11:24 मिनट से शुरू होगी। ये 15 अक्टूबर की दोपहर 12:32 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि के अनुसार, शारदीय नवरात्रि की शुरुआत 15 अक्टूबर से होगी। हिंदू धर्म में नवरात्रि के पर्व को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। हिंदू धर्म में साल में 4 बार नवरात्रि पड़ती है। 2 नवरात्रि प्रत्यक्ष होती हैं और 2 नवरात्रि गुप्त होती हैं। इस 9 दिन के महापर्व के पहले दिन घटस्थापना की जाती है और मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा भी की जाती है। नवरात्रि के नौ दिनों में व्रत भी रखा जाता है। पूरे नियमों के साथ मां दुर्गा की आराधना की जाती है। शारदीय नवरात्रि का पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होती है, जो कि नवमी तिथि को समाप्त होंगी। इसके बाद दशहरा मनाया जाएगा। प्रतिपदा तिथि के दिन घटस्थापना की जाती है। इस दिन से 9 दिन अखंड ज्योति जलाई जाती है।

नवरात्रि में कलश स्थापना का विशेष महत्व है। कलश स्थापना को घट स्थापना भी कहा जाता है। नवरात्रि की शुरुआत घट स्थापना के साथ ही होती है। घट स्थापना शक्ति की देवी का आह्वान है। मान्यता है कि गलत समय में घट स्थापना करने से देवी मां क्रोधित हो सकती हैं। रात के समय और अमावस्या के दिन घट स्थापित करने की मनाही है. घटस्थापना का सबसे शुभ समय प्रतिपदा का एक तिहाई भाग बीत जाने के बाद होता है।

अगर किसी कारण वश आप उस समय कलश स्थापित न कर पाएं तो अभिजीत मुहूर्त में भी स्थापित कर सकते हैं। मां दुर्गा को लाल रंग खास पसंद है इसलिए लाल रंग का ही आसन खरीदें। इसके अलावा कलश स्थापना के लिए मिट्टी का पात्र, जौ, मिट्टी, जल से भरा हुआ कलश, मौली, इलायची, लौंग, कपूर, रोली, साबुत सुपारी, साबुत चावल, सिक्के, अशोक या आम के पांच पत्ते, नारियल, चुनरी, सिंदूर, फल-फूल, फूलों की माला और श्रृंगार पिटारी भी चाहिए।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।